तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 6-7, मई-जून 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

सरकारी स्कूलों की धूम

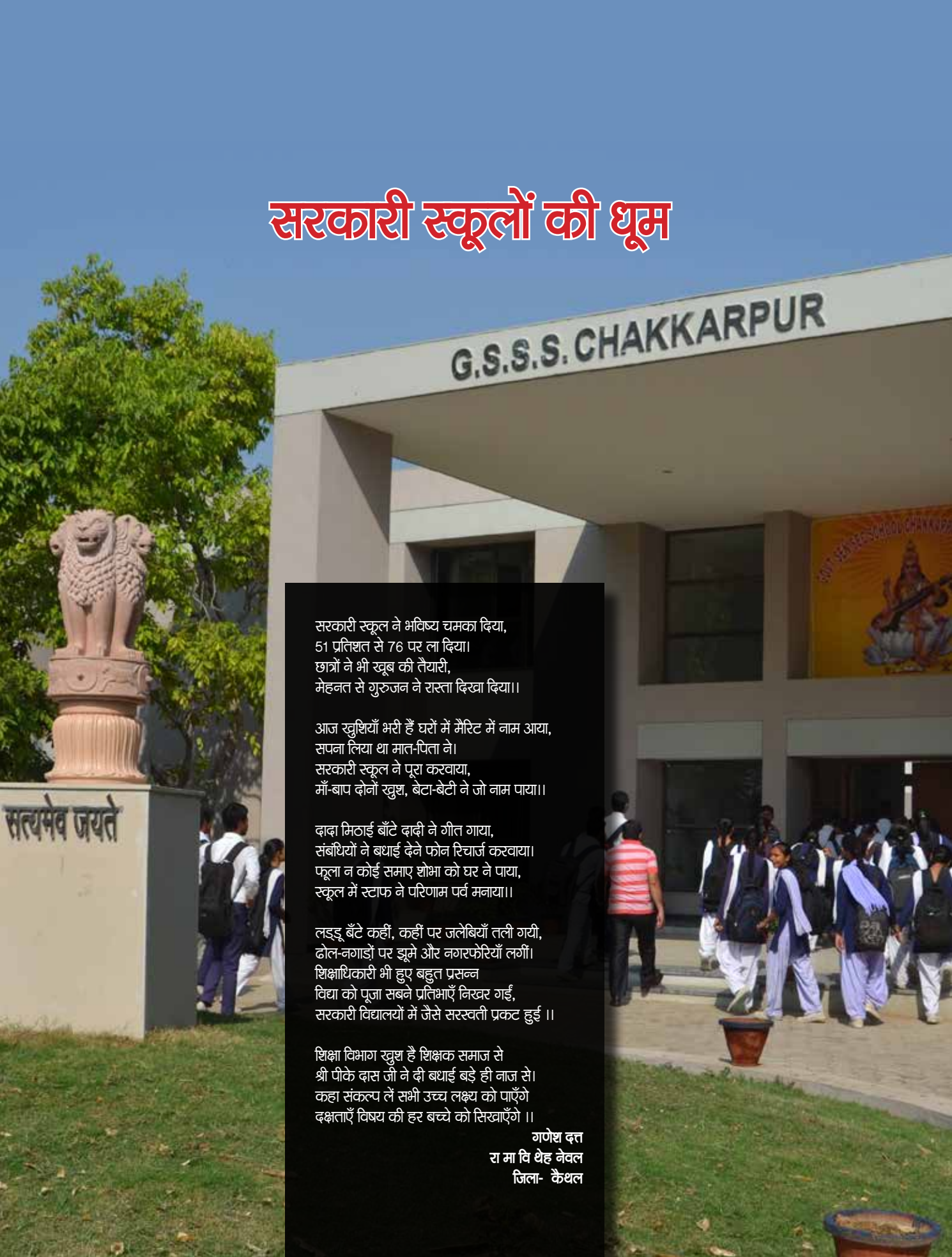

सरकारी स्कूल ने भविष्य चमका दिया,
51 प्रतिशत से 76 पर ला दिया।
छात्रों ने भी खूब की तैयारी,
मेहनत से गुरुजन ने रास्ता दिखा दिया।।

आज खुशियाँ भरी हैं घरों में मैरिट में नाम आया,
सपना लिया था मात-पिता ने।
सरकारी स्कूल ने पूरा करवाया,
माँ-बाप दोनों खुश, बेटा-बेटी ने जो नाम पाया।।

दादा मिठाई बाँटे दादी ने गीत गाया,
संबंधियों ने बधाई देने फोन रिचार्ज करवाया।
फूला न कोई समाए शोभा को घर ने पाया,
स्कूल में स्टाफ ने परिणाम पर्व मनाया।।

लड्डू बँटे कहीं, कहीं पर जलेबियाँ तली गयी,
ढोल-नगाड़ों पर झूमे और नगरफेरियाँ लगीं।
शिक्षाधिकारी भी हुए बहुत प्रसन्न
विद्या को पूजा सबने प्रतिभाएँ निखर गईं,
सरकारी विद्यालयों में जैसे सरस्वती प्रकट हुई ।।

शिक्षा विभाग खुश है शिक्षक समाज से
श्री पीके दास जी ने दी बधाई बड़े ही नाज से।
कहा संकल्प लें सभी उच्च लक्ष्य को पाएँगे
दक्षताएँ विषय की हर बच्चे को सिखाएँगे ।।

गणेश दत्त
रा मा वि थेह नेवल
जिला- कैथल

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मई-जून 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
रामबिलास शर्मा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
पी के दास
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.राकेश गुप्ता
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डी के बेहेरा
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

के के भादू
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-II),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"व्यावहारिक विवेक का होना शिक्षित होने से हजार गुना बेहतर है।"

- मेहनत को लगे सफलता के पंख 5
- स्वस्थ बचपन चमकेगा सुनहरा भविष्य दमकेगा 9
- कैसे बनें विद्यार्थी हिंदी भाषा में सक्षम ? 10
- अच्छे शिक्षक और ज्ञानार्जन 12
- बच्चों को सिखाएँ लाइफ स्किल 16
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता 18
- खेल-खेल में विज्ञान 20
- सौंख विद्यालय : विपरीत परिस्थितियों में सफलता की गाथा 22
- संस्कृत शिक्षक सुखदेव, उत्कृष्ट खो-खो प्रशिक्षक भी 26
- बूझो पहेली 30
- गुरु जी की सीख 31
- It runs in the family : Parents' education... 32
- Aspirations On a High Note 35
- Special Children Need Special Attention 37
- Research @ REAP Cell, SCERT 40
- Summer Activities for Children 42
- NTSE 44
- Mother's love. 46
- General Science 47
- Amazing Facts 48
- Quiz 49
- आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ चित्रः डॉ.प्रदीप राठौर

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

बदला है हवा का रूख

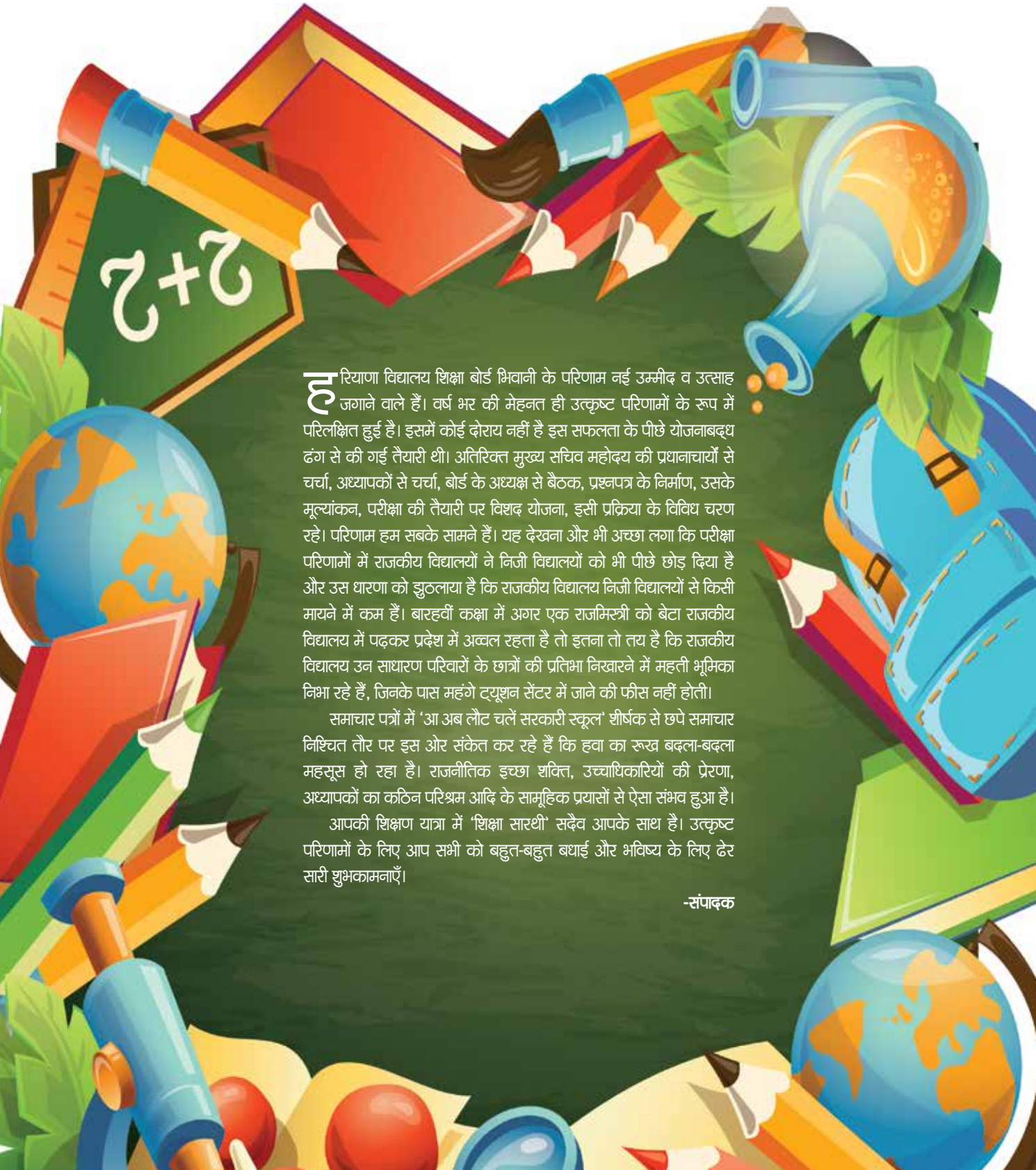

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के परिणाम नई उम्मीद व उत्साह जगाने वाले हैं। वर्ष भर की मेहनत ही उत्कृष्ट परिणामों के रूप में परिलक्षित हुई है। इसमें कोई दोराय नहीं है इस सफलता के पीछे योजनाबद्ध ढंग से की गई तैयारी थी। अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की प्रधानाचार्यों से चर्चा, अध्यापकों से चर्चा, बोर्ड के अध्यक्ष से बैठक, प्रश्नपत्र के निर्माण, उसके मूल्यांकन, परीक्षा की तैयारी पर विशद योजना, इसी प्रक्रिया के विविध चरण रहे। परिणाम हम सबके सामने हैं। यह देखना और भी अच्छा लगा कि परीक्षा परिणामों में राजकीय विद्यालयों ने निजी विद्यालयों को भी पीछे छोड़ दिया है और उस धारणा को झुठलाया है कि राजकीय विद्यालय निजी विद्यालयों से किसी मायने में कम हैं। बारहवीं कक्षा में अगर एक राजमिस्त्री को बेटा राजकीय विद्यालय में पढ़कर प्रदेश में अव्वल रहता है तो इतना तो तय है कि राजकीय विद्यालय उन साधारण परिवारों के छात्रों की प्रतिभा निखारने में महती भूमिका निभा रहे हैं, जिनके पास महंगे ट्यूशन सेंटर में जाने की फीस नहीं होती।

समाचार पत्रों में 'आ अब लौट चलें सरकारी स्कूल' शीर्षक से छपे समाचार निश्चित तौर पर इस ओर संकेत कर रहे हैं कि हवा का रूख बदला-बदला महसूस हो रहा है। राजनीतिक इच्छा शक्ति, उच्चाधिकारियों की प्रेरणा, अध्यापकों का कठिन परिश्रम आदि के सामूहिक प्रयासों से ऐसा संभव हुआ है।

आपकी शिक्षण यात्रा में 'शिक्षा सारथी' सदैव आपके साथ है। उत्कृष्ट परिणामों के लिए आप सभी को बहुत-बहुत बधाई और भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ।

-संपादक

मेहनत को लगे सफलता के पंख

प्रमोद कुमार

मई का महीना इस बार सबके लिए परिणाम का महीना रहा, क्योंकि देश में बच्चों और बड़ों को परीक्षा से गुजरना पड़ा। एक ओर जहाँ देश के प्रधानमन्त्री और उनकी टीम की पाँच साल की मेहनत की परीक्षा थी तो दूसरी ओर राज्य में अध्यापकों और विद्यार्थियों की बोर्ड की परीक्षा थी। दोनों का परिणाम घोषित हुआ। दोनों ही सफल हुए, इसके लिए बहुत-बहुत बधाई। यहाँ एक बात दोनों ही मामलों में समान थी, वह थी तैयारी। पूरी टीम एक साथ एकजुट होकर कार्य करती है तो सफलता अवश्य मिलती है। मैं राज्य के सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों को उनकी बोर्ड की परीक्षाओं के बेहतर परिणाम के लिए बधाई देता हूँ। ये शानदार परीक्षा परिणाम यूँ ही नहीं आए हैं। इसमें अध्यापकों और विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। बारहवीं के परीक्षा परिणामों की घोषणा पर माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय के सन्देश का जिक्र करें तो उसमें साफ झलकता है कि इस पूरी कवायद के पीछे जिसके कारण ये उच्च लक्ष्य प्राप्त हुआ है, उसमें

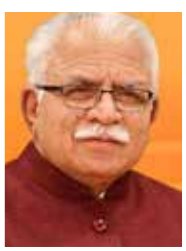

शानदार परिणाम के लिए बधाई

शानदार परीक्षा परिणामों के लिए विद्यार्थियों, उनके शिक्षकों व अभिभावकों को हार्दिक बधाई। किन्हीं कारणों से असफल हुए विद्यार्थियों को निराश होने की जरूरत नहीं है। अभिभावक उनका मनोबल बढ़ाएँ। यह खुशी की बात है कि बेटों के मुकाबले बेटियों के पास-प्रतिशत में 14.47 की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। सभी विद्यार्थियों को भी भविष्य में कड़ी मेहनत करते हुए रचनात्मक गतिविधियों के साथ-साथ सामुदायिक विकास में अपने दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। शिक्षा सुधार के लिए उठाए जा रहे कदमों की बदौलत आज विद्यार्थी पूरे मनोयोग के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

दसवीं कक्षा के परिणाम के लिए नूंह जिले को विशेष तौर पर बधाई। यहाँ शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन दिखाई दे रहा है। इस जिले ने बीसवें स्थान से पाँचवें स्थान पर छलांग लगाई है। सचमुच यह शिक्षा विभाग और विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम का ही परिणाम है कि यह जिला अच्छे-अच्छे जिलों को पीछे छोड़कर टॉप के पाँच जिलों में पहुँच गया है।

-मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

अध्यापक की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है।

माननीय एसीएसएसई महोदय द्वारा हमेशा इस बात पर बल दिया गया कि परीक्षा की तैयारी योजनाबद्ध तरीके से करें। जिस प्रकार नीट, जेईई की कोचिंग प्रदान करने वाले प्रशिक्षण केन्द्र बच्चे की क्षमता का आंकलन करके उसके प्रत्येक पहलू पर योजना बनाकर कार्य करते हैं, हमें भी उसी प्रकार प्रयास करने चाहिए। इस सबके लिए उनके पास एक योजना भी थी। मुझे याद है जब अगस्त, 2017 में उनका स्थानान्तरण हुआ उस दिन कुरुक्षेत्र में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के साथ बोर्ड परीक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर बैठक का आयोजन किया जाना था, लेकिन उनके स्थानान्तरण के उपरान्त यह विषय ठंडे बस्ते में चला गया। महोदय ने जैसे ही इस बार कार्यभार सँभाला तो वहीं से शुरुआत करने को कहा जहाँ से छोड़कर गए थे। उसके बाद आरम्भ हुआ योजना पर कार्य जिसमें अध्यापकों से चर्चा, प्रधानाचार्यों से चर्चा, मूल्यांकन करने वाले समूहों से चर्चा के बाद बोर्ड के अध्यक्ष महोदय के साथ बैठकें की गईं, जिसमें सीबीएसई की भांति प्रश्न पत्रों के निर्माण, उनके मूल्यांकन आदि पर बात हुई। अध्यापकों के विचारों से भी चेयरमैन महोदय को अवगत करवाया गया और बदलाव का आह्वान किया गया। विभिन्न स्तर पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से माननीय एसीएसएसई महोदय द्वारा स्वयं सम्बोधित किया गया। कुरुक्षेत्र में मुख्याध्यापकों और प्रधानाचार्यों के साथ इस गम्भीर मुद्दे पर खुली चर्चा की गई तथा अपना इरादा बनाया गया। महोदय ने अपने वक्तव्य में साफ कहा कि 'जो अच्छा काम करेगा उसका सम्मान करूँगा, अपने सिर पर बिठाऊँगा', इस प्रोत्साहन और प्रेरणा भरे सकारात्मक परिवेश में अध्यापकों की टीम जुट गई। एसीएसएसई महोदय ने लगातार अपनी नज़र बनाए रखी। जहाँ भी इस दौरान महोदय गए वहीं अध्यापकों से मुलाकात की और उन्हें सराहा, उनके काम को सराहा। यहाँ तक कि बच्चों में भी जोश भरा। इस पूरे कार्यक्रम में अध्यापकों की भूमिका सराहनीय रही। सभी ने अपने-अपने लक्ष्य बनाए और उन्हें छोटे-छोटे समूहों में बाँटा। जो बच्चे सिर्फ पास होने थे उनके लिए अलग योजना बनी। जो विद्यार्थी साठ प्रतिशत अंकों के वर्ग में आते थे उनके लिए अस्सी प्रतिशत का लक्ष्य बनाकर योजना बनाई गई और अस्सी प्रतिशत अंक लेने वाले विद्यार्थियों के लिए पचानवे प्रतिशत से ऊपर अंक लाने की योजना पर कार्य आरम्भ किया गया। एसीएसएसई महोदय का सन्देश हाथों-हाथ लिया गया।बारहवीं का परिणाम पहले आया और उसने अनेक रिकॉर्ड तोड़ दिए तथा सबसे सराहनीय रहा। सरकारी स्कूलों ने प्राइवेट स्कूलों पर बाजी मारी। इससे पहले अक्सर केन्द्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों को ही ये सम्मान प्राप्त होता था। पहली बार हरियाणा के सरकारी स्कूलों, अध्यापकों और विद्यार्थियों ने प्रदेश को यह गौरव दिलाया। पड़ोसी राज्य के मुख्यमन्त्री महोदय जो अपने यहाँ शिक्षा उत्कृष्ट होने का दावा और इस प्रदेश के सरकारी स्कूलों की स्थिति पर नकारात्मक टिप्पणी देते थे, उन्हें सबसे बेहतर जवाब देने का कार्य किया और साबित कर दिया कि हरियाणा का अध्यापक, हरियाणा का सरकारी स्कूल देश के सर्वश्रेष्ठ स्कूलों के बराबर खड़ा है। ऐसे प्रदेश में प्राइवेट स्कूलों से बेहतर प्रदर्शन करना, जहाँ भारत के सबसे महँगे स्कूल हों, किसी चुनौती से कम नहीं है। प्राइवेट स्कूल ही अच्छी और गुणवत्ता शिक्षा की गारंटी हैं, इस भ्रम को तोड़ना अत्यन्त जरूरी था और इस रिकार्ड के टूटने की गूंज हर उस कान तक पहुँची है जो प्राइवेट स्कूलों की महिमा का वर्णन करते रहते थे।

मैं आभार प्रकट करता हूँ मीडिया का जिन्होंने इसे प्रमुखता से छापा और लिखा 'आ अब लौट चलें सरकारी स्कूल' जो बताता है कि इस बार के परीक्षा-परिणाम समाज के मन को समझाने में कितने मददगार हुए हैं। लड़कियों ने हमेशा की तरह फिर लड़कों पर बाजी मारी और शहरी स्कूलों को ग्रामीण स्कूलों ने पछाड़ा। ये मुझे कुछ हैरान करने वाला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापकों की कमी है उसके बाद भी अच्छे परिणाम। यहाँ सरकार को भी बधाई देनी अनिवार्य है जिसने 6000 से अधिक पीजीटी की नियुक्ति करके अन्त्योदय का कार्य किया, दूरदराज के अन्तिम स्कूलों को भी अध्यापक देने का कार्य किया। अगर देखा जाए तो पीजीटी की यह

परीक्षा परिणामों में लगातार सुधार

पिछले चार वर्षों में परीक्षा परिणाम 20 फीसदी सुधरा है जो सरकार द्वारा शिक्षा के लिए किए गए विशेष प्रयासों का परिणाम है। इस बार का परीक्षा परिणाम पिछले साल से 10.64 फीसदी अधिक है। सरकारी स्कूलों का परीक्षा परिणाम पिछले वर्ष की तुलना में 12.77 फीसदी अधिक रहा। सभी छात्रों, शिक्षकों और अध्यापकों को बहुत-बहुत बधाई।

-रामबिलास शर्मा,
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

हरियाणा शिक्षा बोर्ड : 12वीं के परीक्षा परिणाम में बेटियां फिर रहीं आगे

भिवानी के राजमिस्त्री का बेटा दीपक 99.40 प्रतिशत अंकों के साथ हरियाणा में अव्वल

अमर उजाला ब्यूरो

भिवानी। हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की ओर से बुधवार को घोषित सीनियर सेकेंडरी का परीक्षा परिणाम (12वीं कक्षा) 74.48 फीसदी रहा। यह पिछले साल के परिणाम (63.84) से 10.64 फीसदी अधिक है। पास होने से लेकर अव्वल रहने तक में बेटियां फिर आगे रही हैं।

इस बार 82.48 फीसदी लड़कियां और 68.01 फीसदी लड़के पास हुए हैं। तीनों संकायों के दस मेधावियों में आठ बेटियां शामिल हैं। निजी की अपेक्षा सरकारी और शहरों के अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों का परिणाम बेहतर रहा है। भिवानी जिले के बवानीखेड़ा के राजमिस्त्री राय सिंह के बेटे दीपक ने 99.40 फीसदी अंकों के (विज्ञान संकाय) के साथ प्रदेश भर में अव्वल रहे हैं। प्राइवेट परीक्षार्थियों का परिणाम 57.61 प्रतिशत रहा है। इस परीक्षा में 19,144 परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए, जिनमें से 11,028 पास हुए।

>> संबंधित पेज- 06/13 पर

74.48% रहा सीनियर सेकेंडरी का परीक्षा परिणाम

82.48% पास होकर बेटियां रहीं अव्वल

68.01% रहा लड़कों का पास होने का प्रतिशत

तीनों संकायों के दस मेधावियों में आठ लड़कियां 17 मई को घोषित होगा 10वीं का परीक्षा परिणाम

लड़कों की अपेक्षा कम लड़कियां बैठीं परीक्षा में

12वीं की परीक्षा में 1,05,947 छात्र बैठे थे, जिनमें 72,056 पास हुए हैं। जबकि 85,580 छात्राओं में से 70,584 पास हुई हैं। भिवानी शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. जगबीर सिंह और बोर्ड सचिव राजीव प्रसाद ने बताया कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियां 14.47 फीसदी ज्यादा पास हुई हैं।

एप पर जान सकेंगे रिजल्ट

12वीं कक्षा का परीक्षा परिणाम भिवानी बोर्ड की वेबसाइट और मोबाइल एप पर देखा जा सकता है। बोर्ड सचिव राजीव प्रसाद ने बताया कि परिणाम संबंधित विद्यालयों/संस्थाओं द्वारा बोर्ड की वेबसाइट पर जाकर अपनी यूजर आईडी व पासवर्ड द्वारा लॉगिन करते हुए डाउनलोड किया जा सकेगा। कोई विद्यालय अगर समय पर परिणाम प्राप्त नहीं करता है तो इसके लिए वह स्वयं जिम्मेवार होगा।

निजी से बेहतर सरकारी स्कूल, शहर से अच्छे ग्रामीण

निजी स्कूलों अपेक्षा सरकारी स्कूलों का पास प्रतिशत बेहतर रहा है। इसी तरह शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों का परिणाम अच्छा रहा है। राजकीय विद्यालयों की पास प्रतिशतता 76.39 रही है जबकि निजी विद्यालयों की पास प्रतिशतता 72.61 है। वहीं, ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पास प्रतिशतता 75.74 है, जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पास प्रतिशतता 71.83 रही है।

नियुक्ति इस परीक्षा परिणाम में संजीवनी का कार्य कर गई। वर्ष 2015 में 53.87 प्रतिशत से आरम्भ हुई यात्रा वर्ष 2019 में 74.48 प्रतिशत तक पहुँच गई है। 21 प्रतिशत की यह वृद्धि अति सराहनीय है, उस स्थिति में जब हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा नकल रोकने के शानदार प्रयास किए गए और परीक्षा परिणामों में ओडरेशन को समाप्त कर दिया गया है। बोर्ड ने जहाँ नकल माफिया जो बोर्ड के अन्दर और बाहर दोनों स्थान पर था, जैसे ही उस पर पूर्ण अंकुश लगाया वैसे ही सरकारी स्कूलों की बेहतर स्थिति सामने आई। इसके लिए बोर्ड अध्यक्ष महोदय तथा सचिव महोदय दोनों बधाई के पात्र हैं।

अगर दसवीं के परिणामों का जिक्र करें तो वे भी अत्यन्त सराहनीय है जिनमें 2016 के 48.88 प्रतिशत से चलकर 57.39 प्रतिशत पर पहुँच गया है। 9 प्रतिशत की यह वृद्धि अध्यापकों की मेहनत का पूरा ब्यान करती है। यहाँ भी लड़कियाँ लड़कों से आगे तथा ग्रामीण शहरी से आगे चल रहे हैं। बारहवीं की तुलना में इसके कम होने की एक वजह यह भी है कि कक्षा 1 से 8 तक विद्यार्थी नो डिटेंशन पॉलिसी के अन्तर्गत पास होते आ रहे हैं और यह पहला फिल्टर है। दसवीं में जहाँ 65 प्रतिशत सामान्य वर्ग के विद्यार्थी पास हुए वहीं अनुसूचित जाति के 46.63 प्रतिशत विद्यार्थी पास हुए। अब लगभग 20 प्रतिशत का यह अन्तर भी काफी है जिस पर भविष्य में ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। 3,64,967 विद्यार्थी दसवीं की परीक्षा में बैठे जिसमें से 2,09,440 विद्यार्थी पास हुए। जो विद्यार्थी पास हुए उनको तो बधाई लेकिन जो 1,55,527 विद्यार्थी फेल हुए उनके बारे में भी बात करना जरूरी है और खासकर 63,000 लड़कियों के बारे में जो फेल हुई हैं। क्या उनके माता-पिता उनको पुनः यह अवसर देंगे कि वे सब दसवीं की पढ़ाई करें। मेरा मानना है इसमें से 50 प्रतिशत से अधिक ड्राप आउट होंगीं और उनकी शिक्षा यात्रा का अन्तिम पड़ाव यही होगा। फेल-पास की नीति का सबसे बड़ा नुक्सान ही इन विद्यार्थियों को होता है। आज परीक्षा परिणाम आते ही समाचार पत्र भर जाते हैं, फोटो छपती है, बधाइयाँ मिलती हैं, जश्न मनाए जाते हैं और होना भी चाहिए, आखिर विद्यार्थियों की पूरे वर्ष की मेहनत का परिणाम होता है। कामयाबी का जश्न भी जरूरी है पर इसी अध्याय का दूसरा पहलू भी है जो हमेशा नजर अंदाज किया जाता है, सफलता का यह जश्न असफल हुए विद्यार्थियों के लिए बहुत ही पीड़ादायक होता है। बच्चों को सामाजिक दवाब का, उपहास का पात्र बनना पड़ता है। पढ़े-लिखे माता-पिता भी इस बात को हजम नहीं कर पाते और अपने बच्चों को प्रताड़ित करते हैं, जिस कारण बच्चे घर से भाग जाते हैं। कई बार तो आत्महत्या भी करते हैं। कुल 3,64,967 बच्चों में से 1,01,513 बच्चे तो अकेले अंग्रेजी विषय में ही फेल हो गए और 96,569 गणित में फेल हो गए तथा 1,10,459 विद्यार्थी साइंस में फेल हो गए अर्थात अंग्रेजी,

स्टाफ व संसाधनों की कमी के बावजूद बोर्ड रिजल्ट में निजी स्कूलों पर भारी राजकीय विद्यालय

आ अब लौट चलें सरकारी स्कूल

पिछले वर्षों में 12वीं का परिणाम

वर्ष	कुल पास प्रतिशत	सरकारी स्कूलों का पास प्रतिशत
2019	74.48	76.39
2018	63.84	63.62
2017	64.60	65.57
2016	62.40	62.23
2015	53.87	51.57
2014	72.91	72.07
2013	59.31	61.31

तीसरी बार प्रदेश में टॉपर रेवाड़ी

80.88

निजी पर भारी सरकारी स्कूल

गणित और साइंस लाख से अधिक बच्चों को ले डूबी। मेरा प्रश्न है बोर्ड के उन विशेषज्ञों से जो प्रश्न पत्र बनाते हैं, आखिर आप क्या देखना चाहते हैं, क्या जाँचना चाहते हैं, वह पेपर किस काम का जिसमें 33 प्रतिशत से ज्यादा बच्चे न्यूनतम 33 प्रतिशत भी न ले सकें। इस प्रकार के प्रश्नों से उसका डिफिकल्टी लेवल इस स्तर का बनाकर आप क्या साबित करना चाहते हैं। यहाँ ये बच्चे फेल नहीं हुए हैं फेल तो श्रीमान आप हुए हैं। दुनिया का कोई ऐसा प्रश्न पत्र मूल्यांकन की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता जिसमें 33 प्रतिशत बच्चे न्यूनतम 33 प्रतिशत भी न ले सकें। मैंने पिछले लेख में भी लिखा था कि हमें सीबीएसई से सीखना चाहिए कि प्रश्न-पत्र निर्माण में कम

से कम 40 प्रतिशत प्रश्न ऐसे हों जिनका उत्तर कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी दे पाए ताकि उसका विश्वास प्रबल हो कि परीक्षा केवल फेल करने के लिए नहीं होती। बकाया 40 प्रतिशत प्रश्न ऐसे हों जो उन विद्यार्थियों का मूल्यांकन करें जो 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करते रहते हैं। विभाग के सैट से इसका अनुमान लगाया जा सकता है। बकाया 20 प्रतिशत उन विद्यार्थियों के लिए हो जो उत्कृष्ट हैं, श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने जेईई, नीट तथा उच्च शिक्षा के लिए अपने लक्ष्य निर्धारित किए हुए हैं। अब सबके लिए एक पेपर बनाने का भी कोई अर्थ नहीं बचा। ऐसा विद्यार्थी जिसने अपने लिए सोच रखा है कि दसवीं पास करने के बाद आईटीआई में जाना है जहाँ फीटर, वैल्डर, टर्नर, पलम्बर, कारपेंटर या मैकेनिक आदि का डिप्लोमा करना है और कौशल विकास करना है, उसके बाद स्वरोजगार में जाना है, उसे आप सबके बराबर की अंग्रेजी, साईंस, गणित पढ़ाकर, एक जैसी परीक्षा में बिठाकर, मई में फेल करके क्या दे रहे हो? उसे आप जिंदगी में एक साल पीछे धकेल रहे हो। जब उसे आपकी श्रेष्ठ अंग्रेजी, साईंस व गणित की आवश्यकता ही नहीं है तो वह क्यों पढ़े?

वह दिन कब आएगा जब व्यवस्था उन्हें गणित के दो पेपर चुनने का अवसर देगी। इन आईटीआई वालों के लिए सामान्य गणित का अवसर होगा और उच्च शिक्षा वालों के लिए अलग गणित होगा। देश के प्रधानमन्त्री बार-बार कौशल विकास की बात करते हैं और व्यवस्था लाख से ऊपर बच्चों को फेल कर देती है। आईटीआई की सभी सीटें भर जाएँ तथा बच्चे अपनी पसन्द का कोर्स कर सकें, इसके लिए जरूरी है बच्चे दसवीं पास हों। इस बारे में अब गम्भीरता से सोचने का समय आ गया है। दुनिया के देश जापान और जर्मनी जहाँ पर कौशल विकास आज भी पूरे विश्व में श्रेष्ठ है, वहाँ आठवीं के बाद विद्यार्थियों के लिए गणित के दो विकल्प हैं। साइंस भी अनिवार्य विषय नहीं है तथा अंग्रेजी के लिए कोई स्थान ही नहीं है। इसका कारण यह है कि वहाँ का युवा अपनी पसन्द का कौशल सीखता है, उसमें डूबता है, फिर प्रयोग करता है, कौशलों को निखारता है, नवाचार अपनाता है और नई खोज करता है, जिसका पेटेंट करवाता है और फिर दुनिया के देशों में बेचकर अपने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देता है। जापान में हुए 60 प्रतिशत पेटेंट केवल कुशल कामगारों के प्रयोग से ही संभव हुए हैं।

दसवीं में लाखों विद्यार्थियों को फेल होने से कैसे बचाया जाए, इस पर गहन मंथन करने का, योजना बनाने का तथा उस पर अमल करने का समय आ गया है। जिस व्यवस्था में लाखों विद्यार्थी फेल होते हों, मेरे अनुसार वह व्यवस्था ही फेल है। विद्यार्थी तो इस फेल व्यवस्था का शिकार हुए हैं। आपने भवन निर्माण में काम करने वाले कारीगरों को देखा होगा जो किसी कुशल वास्तुकार आर्किटेक्ट के पेपर पर बनाए गए डिजाइन को धरातल पर उतारते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे नक्शे में बनाया गया है, तो क्या वे सभी दसवीं पास हैं। जी नहीं, वे सब लगभग अनपढ़ हैं, पर अकुशल नहीं हैं। पत्थर और टाइल लगाने वाला, बिजली की फिटिंग करने वाला, पलम्बर, मैशन, रंगाई वाला, सब के सब दसवीं पास नहीं हैं। दसवीं फेल हैं पर कुशल कामगार हैं। सही अर्थों में वे पास हैं जीवन में भी और कौशल में भी। अगर फेल होते तो अकुशल रहते। फेल है तो वह व्यवस्था जिसने उनके मूल्यांकन के मापदण्ड ही ऐसे बनाए हैं जिन पर वो खरे न उतर सके।

अन्त में श्रेष्ठ परिणाम परिणाम देने वाले सभी स्कूलों, उनके अध्यापकों, विद्यार्थियों व अभिभावकों को बहुत-बहुत बधाई। अच्छे परिणाम हमें सशक्त कर रहे हैं तथा हमें अधिक खरा बना रहे हैं बिल्कुल वैसे ही जैसे कई क्रिकेटर आलोचनाओं का उत्तर शब्दों से न देकर अपने बल्ले से देते हैं, ''विराट नहीं बोलता उसका बल्ला बोलता है।'' इसी तरह सरकारी स्कूल का अध्यापक भी नहीं बोलता उसका परिणाम बोलता है। बड़े और छोटे दोनों ही सफल हुए। 23 मई को 17वीं लोकसभा के लिए हुए चुनावों के परिणाम भी आ गए। जब तक यह लेख आपके पास पहुँचेगा तब तक नई सरकार का गठन भी हो चुका होगा, तो उन्हें भी बधाई।

आशा है नई सरकार तथा एमएचआरडी इन पहलुओं पर ध्यान देगी तथा नई शिक्षा नीति का ड्राफ्ट लागू होगा। माननीय प्रधानमन्त्री जी 'परीक्षा पे चर्चा' के दौरान भयमुक्त परीक्षा, नवाचारी सोच, स्वतन्त्र अधिगम, बाल केन्द्रित शिक्षण, गतिविधि आधारित पठन-पाठन, खेल एवं सहपाठ्य क्रियाओं का, आर्ट शिक्षा का समावेश आदि पर जोर देते हैं। आशा है उसे एमएचआरडी लागू करेगा। इससे बोर्ड परीक्षा का बोझ कम होगा, पाठ्यक्रम का भार कम होगा, अंकों का दवाब कम होगा, सतत और समग्र मूल्यांकन को प्राथमिकता मिलेगी। बच्चों के चहुँमुखी विकास की कल्पना जो एनसीएफ-2005 में की गई थी,वह साकार होगी। खेल का अधिकार मिलेगा और सहपाठ्य क्रियाओं, नृत्य, गायन, वादन, चित्रकला आदि को प्राथमिकता मिलेगी। सभी को पुनः बधाई।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
कार्यालय, महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

राजकीय विद्यालय का दीपक प्रदेश में अव्वल

भिवानी जिले के दीपक ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा घोषित बारहवीं कक्षा की विज्ञान संकाय परीक्षा में प्रदेश भर में अव्वल स्थान प्राप्त किया है। दीपक ने इस परीक्षा में 500 में से 497 अंक हासिल किए। आमतौर पर धारणा रहती है कि टॉपर किसी निजी विद्यालय से होगा, लेकिन दीपक ने इस धारणा को भी झुठलाया है और दिखाया है कि राजकीय विद्यालयों में भी शिक्षा का स्तर किसी मायनें में निजी विद्यालयों से कम नहीं है।

दीपक एक साधारण परिवार से संबंध रखता है। उसके पिता राजमिस्त्री हैं। दीपक ने बताया कि उसने प्राइवेट कोचिंग का सहारा न लेकर सेल्फ स्टडी पर ही ध्यान दिया और सोशल मीडिया से पूरी दूरी बनाकर रखी। यहा तक कि दीपक के पास अपना मोबाइल फोन भी नहीं था। दीपक की पाँच बहनें हैं जो उसकी शानदार सफलता पर बेहद प्रसन्न हैं। दीपक की माता गृहिणी हैं। दीपक का लक्ष्य इंजीनियर बनकर देश के विकास में अपना योगदान देना है। दीपक ने दिखा दिया कि विपरीत परिस्थितियों में भी कड़ी मेहनत और जुनून से बड़ी सफलता हासिल की जा सकती है।

स्वस्थ बचपन चमकेगा सुनहरा भविष्य दमकेगा

विभाग द्वारा 'स्वस्थ बचपन, सुनहरा भविष्य' कार्यक्रम के अन्तर्गत 'दस्तक' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रत्येक माह के प्रथम शनिवार को विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में जागरूक किया जाता है। 24 मई को शुक्रवार के दिन प्रदेश भर के विद्यालयों में यह कार्यक्रम हुआ। 'दस्तक' के अन्तर्गत स्वास्थ्य संबंधी जागरूरता विद्यार्थियों के जरिये समाज तक भी पहुँची। विद्यार्थियों ने अपने आसपास के इलाकों में गली-गली, घर-घर जाकर स्थानीय निवासियों को स्वास्थ्य और शारीरिक स्वच्छता के संबंध में जागरूक किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छोटे-छोटे प्रयासों से एक बड़ा सामाजिक बदलाव लाना है। इस बार जिस संदेश पर ज्यादा ध्यान दिया गया, वह था- मच्छरों से फैलने वाले रोग तथा उनसे बचने के उपाय।

सर्वप्रथम तो विद्यार्थियों को विज्ञान अध्यापकों के द्वारा उक्त विषय के संबंध में जागरूक किया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस संबंध में तैयार की गई सामग्री, पोस्टर आदि तथा वीडियो क्लिप्स विद्यार्थियों को दिखाई गईं। इसके बाद उनके समूह बनाकर उन्हें मुहल्ले अलॉट किए गए। इसके बाद विद्यार्थियों ने अपने-अपने मुहल्लों में जाकर स्वास्थ्य संबंधी संदेश घर-घर तक पहुँचाए। उन्होंने जहाँ-जहाँ दस्तक दी, उन घरों पर चॉक या मार्कर आदि से निशान भी लगाए।

'दस्तक' के तहत अनेक प्रकार के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर विद्यार्थियों को सचेत किया जा रहा है। खाने से पूर्व साबुन आदि से अपने हाथों को अच्छी प्रकार से स्वच्छ बनाना, केशों को सप्ताह में साबुन या शैंपू से कम से कम तीन बार धोना, सप्ताह में एक बार नाखून काटना, नुकीली वस्तुओं से दाँतों को न कुरेदना और न ही ऐसी चीजों से कानों को साफ करना, दिन में दो बार दाँत साफ करना, खाने से पहले फलों को अच्छी प्रकार से धोना, पौष्टिक आहार लेना, हर रोज कुछ समय के लिए कसरत करना, ज्यादा देर टीवी या मोबाइल के साथ न बिताना, उचित प्रकाश में पढ़ना, आसपास पानी इकट्ठा न होने देना ताकि मच्छर न पनपें, सीरिंजों का एक से अधिक बार प्रयोग न करना आदि विषयों के बारे में जागरूक

बनाया जा रहा है।

करनाल ज़िले के गाँव तरावड़ी के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य सुरेश कुमार गोंदर ने बताया कि उनके विद्यालय में 'दस्तक' के तहत विद्यार्थियों को स्वस्थ रहने के अनेक टिप्स रोचक ढंग से दिए गए, जिससे विद्यार्थी काफी लाभान्वित हुए। इसी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कुटेल के विद्यार्थियों ने गाँव में एक जागरूकता रैली निकाली। विद्यालय के प्राचार्य प्रमोद शर्मा के निर्देश पर विज्ञान क्लब के नोडल अधिकारी संदीप कुमार के नेतृत्व में यह रैली निकाली गई।

अंबाला जिले के खंड शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा ने कपड़ा मार्केट में स्थित राजकीय उच्च विद्यालय नंबर-7 से 'दस्तक' कार्यक्रम की शुरुआत की। विद्यालय के 12-12 बच्चों के 8 जत्थों को घर-घर जाकर दस्तक देने के लिए हरी-झंडी दिखाकर रवाना किया। खंड के 62 मिडिल, उच्च एवं वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के लगभग 9 हजार बच्चे स्वच्छता का एवं मच्छरों से होने वाली बीमारियों की रोकथाम व उनसे बचाव का जागरूकता संदेश लेकर घर-घर पहुँचे। शहर में 6 स्कूलों क्रमशः सरकारी स्कूल 7 नंबर, राजकीय कन्या विद्यालय बलदेव नगर, मॉडल टाउन, पुलिस लाइन तथा प्रेम नगर एवं बलदेव नगर के बच्चों ने जागरूक किया। जिले के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शहजादपुर की प्रधानाचार्य ज्योति रानी ने बताया कि वर्षा के मौसम से पहले विद्यार्थियों को मच्छरों के पनपने के कारण, उनके द्वारा फैलाए जाने वाली बीमारियों तथा उन बीमारियों से बचने के उपायों के बारे में चर्चा काफी उपयोगी रही। उनके विद्यालय के विद्यार्थियों ने घर-घर जाकर लोगों को सचेत किया अपने आसपास की चीजों में पानी इकट्ठा न होने दें।

सिरसा जिले के समग्र शिक्षा अभियान के जिला परियोजना समन्वयक आत्मप्रकाश मेहरा द्वारा राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला मीरपुर कॉलोनी के विद्यार्थियों की रैली को हरी झंडी दिखाकर 'स्वस्थ बचपन, सुनहरा भविष्य' कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने विद्यालय में उपस्थित प्रबंधन समिति के सदस्यों व अभिभावकों से आह्वान किया कि अपने आसपास के परिवेश को स्वच्छ बनाना हर सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। बचपन से ही विद्यार्थियों को स्वच्छता का संस्कार प्रदान कर दिया जाएगा, जो जीवन भर यह उन्हें स्वस्थ रखने में मददगार बनेगा।

- डॉ प्रदीप राठौर
drpradeeprathore@gmail.com

कैसे बनें विद्यार्थी हिंदी भाषा में सक्षम ?

डॉ. विजय चावला

आज हम देख रहे हैं कि किस प्रकार हरियाणा शिक्षा विभाग सक्षम व सक्षम प्लस के लिए पूरा ज़ोर लगा रहा है। अधिकारियों से लेकर विद्यालय के शिक्षक व बच्चे एक ही बात पर जुटे हुए हैं कि किस प्रकार बच्चों को सक्षम बनाया जाए। बच्चे आठवीं पास कर जाते हैं लेकिन उन्हें हिन्दी भाषा ही अच्छी तरह पढ़नी व लिखनी नहीं आती। आज समय आ गया है कि इस पर मंथन किया जाए और एक ऐसी शिक्षण रणनीति बनाई जाए जिससे प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों की हिन्दी भाषा सुदृढ़ हो सके।

'हिन्दी भाषा और साक्षरता' शिक्षण की रूपरेखा का एक दस्तावेज़ है जिसमें कक्षा के मुख्य अधिगम लक्ष्य, निर्धारित दक्षताएँ , विषय वस्तु, कक्षा प्रक्रिया के लिए प्रस्तावित रणनीतियाँ, समय-सीमा और आकलन आदि शामिल किए जाते हैं। इसके आधार पर ही अध्यापक अपनी कक्षा के लिए एक विस्तृत शिक्षण योजना तैयार कर सकता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत-सरकार और राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली की ओर से भी अधिगम से संबंधित एक दस्तावेज जारी किया गया है। यह दस्तावेज, वर्ष भर के दौरान कक्षा के लिए मुख्य अधिगम लक्ष्यों को प्रस्तुत करता हैं। इन लक्ष्यों को कक्षा में प्राप्त करने के लिए शिक्षक की ओर से एक रूपरेखा की जरूरत होती है। हिंदी भाषा शिक्षण रूपरेखा के आवश्यक घटक इस प्रकार से हैं-

अपेक्षित लक्ष्य और दक्षता की पहचान- किसी भी तरह के शिक्षण की रूपरेखा के लिए यह जरूरी है कि निर्धारित कक्षा के लिए अपेक्षित लक्ष्य और लक्षणों की पहचान पहले कर ली जाए। प्रत्येक कक्षा के लिए पाठ्यक्रम में विषय वार दक्षता सूची तय की जानी चाहिए। प्रत्येक दक्षता और इसकी उपलब्धि के आकलन को अच्छे से समझना भी अनिवार्य है।

बच्चों के स्तर और भाषायी परिवेश का अध्ययन- भाषा शिक्षण में बच्चों के परिवेश, संस्कृति, स्थानीय भाषा इत्यादि को समझना आवश्यक है। कक्षा में शिक्षण कार्य करने से पूर्व एक शिक्षक को इस बारे में जानकारी ले लेना अनिवार्य होता है कि बच्चे की विद्यालय की भाषा और घर की भाषा अलग है कि नहीं। अगर बच्चे की घर की भाषा विद्यालय की भाषा से बिल्कुल अलग है तो शिक्षक की भाषा शिक्षण की रणनीति सामान्य रणनीति से अलग होनी चाहिए।

कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए समय निर्धारण- कक्षा के लिए भाषा शिक्षण की रणनीति बनाने के लिए यह तय करना आवश्यक है कि कक्षा में भाषा शिक्षण के लिए कितना समय उपलब्ध है। शोधों के द्वारा यह साबित हो चुका है कि बच्चों की भाषायी और साक्षरता उपलब्धि में कक्षा में शिक्षण कार्य के लिए दिए गए समय का काफी योगदान रहा है। हिंदी भाषा शिक्षण के लिए 90 मिनट का कालांश होना अनिवार्य है।

शिक्षण के लिए विषय वस्तु और क्रम का निर्धारण एक व्यवस्थित तरीके के अंतर्गत किया जाना चाहिएं।

विद्यालय में शिक्षण कार्य के लिए व्यवस्थागत रणनीतियाँ भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

शिक्षण के लिए गतिविधि और सामग्री का भी पूर्ण प्रबंध कक्षा-कक्ष में होना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा का शिक्षण चार खंडीय रूपरेखा के अनुसार होना अनिवार्य है। चार खंडीय रूपरेखा के तहत भाषा शिक्षण में मौखिक भाषा के विकास पर बल दिया जाना चाहिए। मौखिक भाषा के अंतर्गत कक्षा- कक्ष में कविता, बाल गीत का वाचन या गायन किया जाना चाहिए। कहानी सुनना और उस पर चर्चा करने की गतिविधि भी करवाई जानी चाहिए। शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना और उस पर चर्चा करना, चित्र व अनुभव पर चर्चा करना, बच्चों के द्वारा कहानी बनाना, बच्चों के द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना, मौखिक खेल में अभिनय की गतिविधि आदि शामिल हैं। मौखिक भाषा के विकास के लिए 15 से 20 मिनट का कालांश बच्चों को दिया जाना चाहिए।

उसके पश्चात चार खंडीय रूपरेखा का दूसरा पहलू डिकोडिंग कौशल का विकास है। इसके अंतर्गत अध्यापक द्वारा बच्चों में वर्ण, अक्षर पहचान से संबंधित गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिएं। डिकोडिंग कौशल खेल गतिविधियों के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। बच्चों से जोड़कर शब्द बनाना, शब्द पठन की गतिविधि करवाना इसके अंतर्गत शामिल होता है। डिकोडिंग संबंधित लेखन कौशल में अक्षर, शब्द लिखना भी शामिल है। डिकोडिंग कौशल विकसित करने के लिए अध्यापक वर्ण ग्रिड, अक्षर ग्रिड, पासे का खेल, साँप सीढ़ी का खेल, बिंगो खेल आदि गतिविधियों का प्रयोग करके करवा सकता है। इसके लिए कक्षा-कक्ष में अध्यापक को 35 से 40 मिनट का समय बच्चों पर दिया जाना चाहिए।

चार खंडीय रूपरेखा का तीसरा पहलू है- पठन कौशल विकसित करना । इसके अंतर्गत प्रिंट संबंधी अवधारणा समझ पाना, किताबों को पढ़ने का अभिनय करना, लोगोग्राफिक पठन करना, सांझा पठन और चर्चा करना, किताब पढ़ना, पोस्टर चार्ट से पठन करना, पढ़ने का अभिनय करते हुए कुछ-कुछ शब्दों को पहचानना, छोटे-छोटे सरल पाठ पढ़ना, स्वतंत्र रूप से पाठ पढ़ कर समझना आदि शामिल हैं। पठन के अंतर्गत आदर्श वाचन मार्गदर्शन में पठन, स्वतंत्र पठन, सांझा पठन आदि रणनीतियों का प्रयोग करते हुए अध्यापकों को बच्चों को पढ़ाना चाहिए।

चार खंडीय रूपरेखा का चौथा पहलू है लेखन कौशल का विकास करना । इसके अंतर्गत अध्यापक कक्षा-कक्ष में किसी चित्र, कहानी, घटना इत्यादि के बारे में लिखने को बच्चों को कहा जा सकता है। शब्दों की मदद से वाक्य बनाना, चित्र, बातचीत के आधार पर निर्देशित लेखन करना, स्वतंत्र लेखन करना, पहचाने गए अक्षरों व शब्दों को लिखना, चित्र बनाना और लिखना, सुनकर वर्ण व शब्दों को लिखवाना आदि शामिल है।

इस प्रकार हिंदी भाषा शिक्षण में यदि अध्यापक चार खंडीय रूपरेखा का प्रयोग करते हुए बच्चों को हिंदी भाषा पढ़ाता है तो निःसंदेह बच्चे हिंदी भाषा में सक्षम हो जाएँगे। आज चार खंडीय रूपरेखा के अतिरिक्त अध्यापक को विभेदीकृत शिक्षण पद्धति को भी अपनाना होगा। इसके अंतर्गत अध्यापक को उन बच्चों पर विशेष नजर रखनी होगी और विशेष प्रकार की रणनीतियों का प्रयोग करना होगा जो बच्चे सक्षम होने में पिछड़ रहे हैं। यदि अध्यापक विभेदीकृत शिक्षण पद्धति के माध्यम से विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग करते हुए ऐसे बच्चों पर ध्यान देता है तो ये बच्चे पिछड़ने की बजाए अन्य बच्चों की तरह सक्षम होने में पूर्णतः सफल हो जाएँगे। ऐसा हो जाने पर बच्चे हिन्दी में सक्षम ही नहीं सक्षम प्लस हो जाएँगे। इसका लाभ बच्चों को अन्य विषयों में भी होगा ।

राजकीय संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
क्योड़क, जिला- कैथल

लोकतंत्र के महापर्व को समर्पित किया रक्तदान शिविर

लोकतंत्र के महापर्व को समर्पित रक्तदान शिविर का आयोजन बीते दिनों पंचकूला ज़िले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रत्तेवाली में किया गया, जिसमें 67 रक्तदाताओं ने मानवता के लिए यह योगदान दिया। रक्तदान शिविर में ज़िला शिक्षा अधिकारी श्री एचएस सैनी व खंड शिक्षा अधिकारी पूनम शर्मा विशेष तौर पर रक्तदाताओं को प्रोत्साहन करने पहुँचे।

जिला शिक्षा अधिकारी एचएस सैनी ने रक्तदाताओं से कहा कि मानव रक्त का कोई अन्य विकल्प अभी तक विज्ञान से संभव नहीं हो पाया है। इसलिए मानवता को बचाने के लिए इसे सर्वोत्तम दान माना गया है। उन्होंने गाँव के सरपंच रौकी राम द्वारा इस महान कार्य में दिए योगदान की सराहना की और कहा कि पंचायत द्वारा इस प्रकार से सहयोग देना अन्य पंचायतों को भी समाज में कुछ करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र का महापर्व हरियाणा में 12 मई को होगा। दोनों का मकसद समाज में सुधार लाना है।

खण्ड शिक्षा अधिकारी पूनम शर्मा ने कहा कि रक्तदान शिविर में बेशक 18 वर्ष से ऊपर की आयु के लोग ही योगदान दे सकते हैं, परन्तु विद्यालय स्तर पर इनका आयोजन करने से विद्यार्थियों में भी मानवता की सेवा करने की प्रेरणा विद्यालय की प्रधानाचार्या व अध्यापकों से मिलती है। इस अवसर पर उन्होंने रक्तदान की महत्ता के बारे बताते हुए कहा कि रक्त देने के पश्चात वह रक्त 24 घण्टे में पूरा हो जाता है और नव रक्त का नाड़ियों में संचार होता है।

पीजीआई से आई 8 सदस्यों की टीम ने शिविर में रक्त एकत्रित किया। इससे पूर्व टीम के डॉक्टरों ने छात्र- छात्राओं को रक्त के प्रकारों के बारे बताया। उन्होंने बताया कि रक्त 18 से 70 वर्ष की आयु तक के स्वस्थ लोग दे सकते हैं। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती साधना ने ज़िला शिक्षा अधिकारी एचएस सैनी, खण्ड शिक्षा अधिकारी पूनम शर्मा का धन्यवाद किया ।

सुमन शर्मा
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रत्तेवाली
जिला पंचकूला

अच्छे शिक्षक और ज्ञानार्जन

यह बात अच्छी हो या बुरी, मानव समाज में स्कूली व्यवस्थाएँ अब स्थापित हो चुकी हैं। घर में ही स्कूलिंग को छोड़ दें तो स्कूल चाहे मुख्य धारा का हो या वैकल्पिक, बच्चे घर और माता-पिता से दूर वयस्कों के एक और समूह के पास जाते हैं, जिन्हें शिक्षक कहते हैं और यहाँ वे एक ऐसी गतिविधि के लिए जाते हैं जिसे हम शिक्षा कहते हैं। स्कूलों में शिक्षा कमोबेश स्पष्ट लक्ष्यों के साथ की जाने वाली गतिविधि है। स्कूलों ने ज्ञानार्जन के इस प्रोजैक्ट के एक बड़े हिस्से को (व्यावसायिक तथा आर्थिक मायनों में) अपने व्यापार के तौर पर ले लिया है। स्कूल विद्यार्थियों को भविष्य में किसी पेशे के लिए तैयार करने की आशा करते हैं।

स्कूल जाना बस एक नियम ही नहीं है : यह तब तक के लिए ही एक मानक है जब तक कि आपके लिए इसका खर्च वहन करना सम्भव न हो। उनमें से अधिकतर माँ-बाप के लिए, जिनके लिए ऐसा कर पाना सम्भव हो, शिक्षा उनके बच्चों के बौद्धिक विकास, व्यावसायिक जगह बना पाने, सामाजिक स्तर पर ऊपर की ओर गतिशीलता और कई अन्य ऐसे ही लेकिन विभिन्न कारणों से स्पष्ट तौर पर आवश्यक है। कुछ लोग शिक्षा को इन्सान को पोषित करने की ओर प्रवृत्त एक आध्यात्मिक गतिविधि के रूप में देख सकते हैं।

कुल मिलाकर स्कूलों को जीवन के लिए एक तैयारी के रूप में देखा जाता है और स्कूली शिक्षा एक सुरक्षित भविष्य की जरूरत के साथ बँधी नजर आती है या तो पूरी शिद्दत से अपनाए गए पेशे के रूप में या फिर एक विकासरत वेतन के स्रोत के रूप में या फिर स्वयं की इच्छा-पूर्ति के लिए। अपनी शिक्षा के लिए विद्यार्थियों के लक्ष्य केवल उनके माता-पिता की (और कुछ अपनी भी) आकांक्षाओं से संचालित नहीं होते बल्कि समाज की उन माँगों से भी प्रभावित होते हैं जिन्हें हम किसी विशेष सामाजिक परिवेश के सरोकारों में स्थित कर सकते हैं। इस व्यापक क्षेत्र में स्कूली व्यवस्थाएँ स्वतंत्र और विलग खिलाड़ी नहीं हैं। वे अक्सर विद्यार्थियों को विशिष्ट तरीकों से सक्षम बनाने या दिशा-निर्देशित करने का वादा करती हैं, ऐसे तरीकों से जो मौजूदा समाज की माँगों को सुव्यवस्थित तौर पर पूरा करते हैं या फिर एक नए और अपेक्षित बेहतर समाज की माँगों के लिए।

व्यक्ति के तौर पर शिक्षक

अब हम शिक्षक की बात कर सकते हैं। दुर्भाग्य यह है कि शिक्षक को अक्सर इस स्कूल-व्यवस्था का बस एक तत्त्व मात्र बना दिया जाता है। आम-प्रचलित भाषा-प्रयोग में मशीन का एक पुर्जा, जिसे भविष्य की सफलताओं के लिए तयशुदा संवेग को बनाए रखने हेतु स्थित करते हुए गति दी जाती है, और जिसका इस्तेमाल व्यावसायिक तथा अकादमिक प्रशिक्षण की स्थापित रिवायत को बनाए रखने के लिए होता है।

लेकिन मेरा विचार है कि शिक्षक किसी के लिए या किसी जगह के लिए नहीं होते। वे न तो स्कूल नामक विशेष संस्थाओं के प्रतिनिधि होते हैं और न ही वे एक ऐसे समाज के एजेंट हैं जिसने उन्हें अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के मकसद से युवा दिमागों को ढालने के लिए रोजगार दिया है। वे तो ज्ञानार्जन की प्रक्रिया से सम्बद्ध होने वाले स्वतंत्र खोजी हैं। वे किन्हीं विशेष विचारधाराओं के प्रचारक नहीं हैं, वे हर तरह की विचारधारा के विचारशील आलोचक हैं। वे वयस्क संसार के अनुकरणीय व्यक्ति या आदर्श नहीं हैं। बल्कि वे उस संसार से बाहर कदम रखने वाले, उस समाज की ओर पीछे नजर डालने वाले और उस पर टिप्पणी करने वाले वयस्क हैं जिसे कई वयस्कों ने आवेश में, और कई बार विवशता में, चाहे-अनचाहे, रचा है।

लगता है कि विद्यार्थियों और उनके सीखने पर सीधा और पूरे जोर के साथ प्रभाव छोड़ने की सामर्थ्य एक शिक्षक में होती है। अक्सर इनमें से कई अच्छे शिक्षक हमारे लिए दीर्घकालिक चिन्तन और सोच-विचार से सम्बद्ध सबक छोड़ जाते हैं। जब मैं अपने जीवन में आए अच्छे शिक्षकों के गुणों को याद करता हूँ तो मैं देख-समझ पाता हूँ कि किस वजह से वे अच्छे शिक्षक

थे। अच्छे शिक्षक अपने विद्यार्थियों की जरूरतों और प्रतिक्रियाओं के प्रति संवेदनशील, बिना शर्त स्नेही लेकिन कुछ हालात में डाँटने वाले, खुले मन के व्यक्ति होते हैं। वे जानकार और ज्ञानवान होते हुए भी सीखने को तैयार होते हैं, अपनी कक्षा के लिए अच्छे से तैयार होते हुए लचीले, सहज और स्वतः स्फूर्त स्वभाव के होते हैं। वे आदान-प्रदान में स्तर की ऊर्जा दर्शाते हैं, सीखने की सामग्री व्यवस्थित करने में बड़ी पहलकदमी भी लेते हैं। वे व्यवहार में अनौपचारिक, ध्यान देने वाले, प्रतिक्रिया देने को तैयार और आसानी से उपलब्ध रहते हैं। वे सख्त होते हुए भी दयालु होते हैं और उनमें विद्यार्थियों तथा कक्षा से भी ऊपर उठते हुए जिम्मेदारी की गहरी भावना होती है और समय के साथ वे हमें अपने ही जैसे हाड़-मांस के सामान्य इन्सान की तरह दिखाई देते हैं। अक्सर इन शिक्षकों में अपनी महानता का घमंड नहीं होता और इसलिए वे विनम्र होते हैं। और बहुत ही सराहनीय भी।

शिक्षण, एक पेशे के रूप में

एक सहकर्मी ने हाल ही में 'द इकॉनमिस्ट' में शिक्षण और शिक्षक-प्रशिक्षण पर छपा एक लेख साझा किया। कक्षा का छोटा या बड़ा होना, (विद्यार्थियों को) योग्यता के मुताबिक व्यवस्थित/पंक्तिबद्ध करना आदि जैसी बातें बहुत से माँ-बाप के लिए सबसे अधिक महत्त्व रखती हैं। लेकिन लगता यह है कि इन बातों का विद्यार्थी के सीखने के सफल अनुभव पर लगभग कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। यह सफलता सबसे अधिक तो शायद शिक्षक के कौशल से प्रभावित होती है, यानी इस बात से कि शिक्षक असल में सब सम्बद्ध विद्यार्थियों के साथ कक्षा में क्या करता है। यह शायद बहुत हैरत में डालने वाली बात न लगे लेकिन इस पर किए गए अध्ययनों की बड़ी संख्या को ध्यान में रखें तो यह बहुत फायदे की बात है जिसके मुताबिक यह स्थापित हुआ कि शिक्षक बेशक शिक्षा की एक विशाल व्यवस्था में प्रभाव और परिवर्तन का एक मूल एजेंट दिखाई देता है।

इसके अलावा लेख यह भी सुझाता है कि अक्सर विश्वास किया जाता है कि अच्छा शिक्षण एक जन्मजात, स्वाभाविक कलात्मक प्रतिभा है। शिक्षक इसके साथ ही जन्म लेते हैं। यह बात बहुत ही दुर्लभ मामलों में सही हो सकती है, लेकिन यह तो स्पष्ट ही है कि कक्षा में शिक्षण अधिकतर एक परिष्कृत, दक्षतापूर्ण हुनर है जिसके बारे में सीखा और जाना जा सकता है। दक्षताएँ सीखी जा सकती हैं, उन्हें पैना किया जा सकता है, तकनीकों को अच्छे से समझा और लागू किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, व्यवहारवादी विज्ञान के तहत समझी और व्याख्यायित की गई इस प्रकार की शिक्षण-प्रथा को शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में सीखा जा सकता है। इस विषय में हुए शास्त्रीय और समकालीन अनुसन्धानों में पर्याप्त ऐसी जानकारी है जिससे हमें कक्षा में शिक्षण हेतु ऐसे विचार मिलते हैं जिन्हें हम चाहें तो जीवन भर लागू कर सकते हैं। यह अनुसन्धान लाभप्रद सिद्धान्तों और प्रतिमानों से भरा पड़ा है। जानकारी मिलती है कि शिक्षकों और विद्यार्थियों की शिक्षण और सीखने की शैलियाँ हैं और व्यक्तित्व सम्बन्धी शैलियाँ भी; बोध और नैतिक विकास में बच्चों के विकासात्मक मीलपत्थर होते हैं; अनुसन्धान में शैक्षिक संस्थाओं के लिए, इस बारे में लाभप्रद विचार भी हैं कि प्रभावशाली होने के लिए अपने स्थान को कैसे व्यवस्थित किया जाए; और सीखने की विशेष आवश्यकताओं के लिए समावेशी शिक्षा के बारे में भी विचार हैं, आदि-आदि।

हम इस क्षेत्र से मिलने वाली अन्तर्दृष्टि को दरकिनार नहीं कर सकते। प्रभावशाली शिक्षण-प्रथाओं के बारे में जानना-सीखना व्यक्तियों के सीखने के अनुभव को बेहतर ही कर सकता है।

अच्छा शिक्षण और एक अच्छा शिक्षक

प्रभावशाली शिक्षण की तकनीकों को तो समय-समय पर लागू किया और दोहराया ही जाना चाहिए लेकिन मेरे विचार से हमें शिक्षण और सीखने की उस संस्कृति को समझने में भी दिलचस्पी होनी चाहिए जिसे रचने में हम योगदान देते हैं। मैं कुछ ऐसे सवालों पर संक्षेप में चर्चा करना चाहूँगा जिनमें इस बात की सम्भावना मौजूद है

- बल्कि कक्षा के वातावरण को परिवर्तित करने की भी सम्भावना है। ये वे सवाल हैं जिनसे मैं शिक्षण की अपनी यात्रा में प्रेरित हुआ हूँ (बल्कि ये बार-बार मेरे ज़ेहन में आते रहे हैं)। आशा है कि इनसे कुछ सोचना-विचारना पैदा होगा जिससे विभिन्न तरह के काम निकलकर आ सकते हैं न कि दैनिक दिनचर्या में विशेष काम के लिए बस सामान्य दिशा-निर्देश।

पहले एक शुरुआती बात : एक अच्छे शिक्षक को स्वीकारना महत्त्वपूर्ण है लेकिन हमें अच्छे शिक्षण के बारे में सोचना और उसे तलाशना-परखना चाहिए न कि कुछ विशेष व्यक्तियों को अच्छे शिक्षक के तौर पर चिह्नित करना। महत्त्वपूर्ण बात सीखना-सिखाना, शिक्षण और ज्ञानार्जन है। यह शैक्षिक प्रक्रिया के केन्द्र में है। एक शिक्षक को अच्छे या बुरे के तौर पर मूल्यांकित करने से ध्यान व्यक्ति और उसकी विशेष सामर्थ्य पर आवश्यकता से अधिक केन्द्रित रहता है। उसकी किसी भूमिका के सन्दर्भ में किसी व्यक्ति के मूल्यांकन की तह में कोई विशेष मान्यता रहती है, जिसके तहत उसे अपरिवर्तनीय योग्यताओं वाले एक सुपरिभाषित, कमोबेश स्थायी पहचान के व्यक्ति के रूप में लिया जाता है। हमें इस बात को सन्देह की नजर से देखना होगा।

ये विचार मेरे खुद के नहीं हैं और कई विचारकों से प्रेरित हैं। मैं पिछली सदी के जाने-माने विचारक और वक्ता, जे. कृष्णमूर्ति (जिन्होंने जीवन और शिक्षा पर बहुत वार्तालाप किया है) द्वारा उठाए गए कुछ सवालों को लेना चाहूँगा। हम कह सकते हैं कि शिक्षण और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को ज्ञानयुक्त रखने के लिए इन सवालों को जिन्दा रखे जाने से एक अच्छा शिक्षक बनता है।

एक सही सम्बन्ध होने का क्या अर्थ है?

ऐसा लगता है कि सम्बन्ध सीखने के केन्द्र में होता है - कम से कम एक स्कूल में तो जरूर। न केवल विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच एक ईमानदार, खुले दिमाग का सम्बन्ध, बल्कि सहकर्मियों तथा शिक्षकों और माता-पिता के बीच भी। इसका अर्थ होगा कि वयस्क के तौर पर किसी अन्य के साथ प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं होगी और न ही शिक्षा की प्रक्रिया में सामर्थ्य तथा महत्त्व के अर्थ में किसी के साथ तुलना की जा रही होगी।

इसी तरह, क्या विद्यार्थियों को जैसे वे हैं, वैसे ही देखना सम्भव होगा? यानी एक व्यक्ति के सीखने के अनुभव को उसी रूप में देखना जैसा वह है तुलनात्मकता के बिना। क्या एक शिक्षक अपनी इस जरूरत के प्रति जागरूक और सतर्क हो सकता है कि विद्यार्थियों से उसे अनुमोदन और प्रशंसा मिले? क्या सम्बन्ध को इस तरह स्थापित किया जा सकता है कि उसमें पूर्ण और गहरे रूप से जिम्मेदारी का भाव हो, जहाँ निज के हित और व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा उभरते दिखें तो हम सजग रहते हुए उनका यह उभरना देख पाएँ?

कक्षा में व्यवस्था की जाँच-पड़ताल कैसे हो?

कक्षा पर नियन्त्रण होने को एक अच्छे शिक्षक की सबसे बड़ी विशिष्टता माना जाता है! ऐसा लगता है कि अनुशासन निकलवाना और व्यवस्था स्थापित करना एक व्यक्ति में गहरी तसल्ली का भाव पैदा करता है। मैं यह नहीं कह रहा कि एक अव्यवस्थित, अराजक कक्षा बेहतर होती है। लेकिन शायद बेहतर यही है कि ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को खुलने दिया जाए और ऐसा व्यक्तिगत ज्ञान या अनुभव की सत्ता पर बल दिए बिना किया जाए। एक प्रिय सम्बन्ध बनने पर इन दोनों बातों को उनका उचित आदर-सम्मान मिल जाएगा। जहाँ एक ओर विषयवस्तु के बारे में निश्चित न होना या कक्षा में विद्यार्थियों के साथ व्यवहार या विषय में अक्षम होना अस्पष्टता की ओर ले जाता है, वहीं इसकी कोई गारण्टी नहीं है कि इसके विपरीत स्थिति में प्रभावी ज्ञानार्जन होगा! कक्षा में अनुशासन विद्यार्थी के व्यवहार पर कठोर नियन्त्रण के बारे में नहीं है बल्कि सीखने की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के बारे में है। दमनकारी या दबाव वाले शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्धों में ऐसा हो पाना सम्भव नहीं होगा।

भय और विरोध का ज्ञानार्जन पर क्या प्रभाव रहता है?

स्कूलों में अब प्रदर्शन की ही बात होती है। अक्सर, एक अच्छा स्कूल ढूँढ पाना माता-पिता के लिए अच्छे माता-पिता होने का सबूत बन गया है! लेकिन ज्ञानार्जन बस इसके बारे में ही नहीं हो सकता। प्रदर्शन या कार्य का मूल्यांकन और आकलन विद्यार्थियों में दक्षता-विकास को समझने के उपकरण हैं। इन उपकरणों का निरन्तर इस्तेमाल किसी के ज्ञानार्जन के बारे में निर्णय लेने के लिए, और सीखने को केवल प्रदर्शन से जोड़कर तथा ज्ञान के संग्रहण के रूप में देखा जाता है तो शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों में चिन्ता और घबराहट ही पैदा होते हैं। ये उपकरण सीखने की सम्पूर्ण प्रक्रिया का स्थान नहीं ले सकते। स्कूलों में कक्षाओं के कमरे और संबंधित विषय और कार्य-प्रदर्शन से सम्बद्ध डर मन में बैठा देते हैं। क्या हम इस बात को समझ सकते हैं कि अच्छा प्रदर्शन कर पाने से सम्बद्ध यह भय किस तरह एक बाधा का काम करता है? - केवल एक विषय में प्रदर्शन या एक रिश्ते में भय को समझने के अर्थ में नहीं, बल्कि स्वयं भय के बारे में सीखने हेतु अवलोकन के अर्थ में। सीखना एक

भावनात्मक अनुभव है उससे भी अधिक जितना कि हम मानने को तैयार हैं। हम यह समझ पाएँ तो काम करने के प्रति विरोध की समस्या सुलझाने का भी संकेत हमें मिल सकता है। ऐसे में शायद किसी भी बाहरी उत्प्रेरक की जरूरत हमें न पड़े।

प्रेरणा को कैसे समझा जाए?

हम वयस्क के तौर पर अपने जीवन में विभिन्न तरह की हिंसा को निरन्तर बनाए रखते से दिखाई देते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है ज्ञानार्जन की समस्याओं से सम्बोधित होते हुए इनाम और दण्ड देने की प्रवृत्ति। प्रेरणा की इस व्यवस्था की हिंसा को सीधे तौर पर देखना सम्भव है। यह तो बहुत जल्दी ही स्पष्ट हो जाता है कि दण्ड हिंसक क्यों है, लेकिन इनाम का हिंसक होना शायद इतना स्पष्ट न हो। मेरे विचार से जब हम अपेक्षित व्यवहार को छाँटकर ईनाम देते हैं और इस तरह इनाम देने को अनुकूल व्यवहार के साथ जोड़ते हैं तो हम विद्यार्थियों को पावलोव के कुत्तों की तरह देख रहे होते हैं! यहाँ मैं प्रेममयी एवं सच्चे मन से प्रोत्साहन, प्रभावी प्रशंसा, उचित डाँटना जैसी बातों का जिक्र नहीं कर रहा।

इनाम और दण्ड की एकांगी व्यवस्था अनुकूलन और रचनात्मकता के दमन को प्रोत्साहित करती है। हम गणित और अंग्रेजी साहित्य तो सीख ही सकते हैं, इसी तरह किसी को गणित और अंग्रेजी साहित्य सीखने के लिए चालाकी से संचालित करने में निहित हिंसा के बारे में भी जान सकते हैं।

ऊपर चर्चा में आए चार सवाल एक शिक्षक के लिए सीधे तौर पर प्रासंगिक प्रतीत होते हैं, जब वह ज्ञानार्जन की किसी जगह के साथ सम्बन्ध बना रहा हो। इनके अलावा दिखने में कुछ और जटिल सवाल हैं जिन्हें, मेरे विचार से, कोई भी शिक्षक शिक्षण का काम करते हुए दरकिनार नहीं कर सकता।

अनुकूलन की क्या भूमिका है?

यह समझना आवश्यक है कि जीवन में हमारी प्रेरणाएँ और भय केवल हमारे अपने नहीं होते। वे समाज के तौर पर हमारी चेतना का सांझा हिस्सा होते हैं, और कई पीढ़ियों से व्यवस्थित तौर पर बहुत ही बारीकी से अनुकूलित होते हैं। क्या यह देख पाना सम्भव होगा, कि हम ही संसार हैं (कृष्णमूर्ति के शब्दों में, माइकल जैक्सन के नहीं!)? हम कुछ विशेष तरह से महसूस करने के लिए अनुकूलित होते हैं : असफल होने का, भविष्य का, सत्ता का भय आदि। हमारी भावनाएँ इस बारे में शायद अधिक बता सकती हैं कि हम कैसे सोचते हैं, न कि संसार की असल प्रकृति के बारे में। शायद हमारे भीतर के इस अनुकूलन की गतिशीलता को देख पाना, उसका अवलोकन कर पाना, हमें उसकी मजबूत पकड़ से आजाद करवा पाए?

किसी बात की जड़ तक पहुँचना और उससे आजाद होना

कुछ सवाल शायद हमारे लिए इन्सान के मस्तिष्क के बारे में हमारी सोच को खोल पाएँ। बहुत बार इस आशय की बात की जाती है कि सीखने के लिए मस्तिष्क को एक तरह से चेतनाशून्य अवस्था से जगाने की जरूरत होती है, कि हमें ध्यान केन्द्रित कर पाने से सम्बद्ध तकनीकें विकसित करनी होंगी नहीं तो हम असावधानी और लापरवाही के भँवर में खो जाएँगे। लेकिन अगर मानव-मस्तिष्क सीखने के लिए हमेशा तैयार ही हो, तो क्या हो? तब क्या हो अगर हमारे विचारों से लगातार उपज रहे व्यक्तिगत अनुभव की सशक्त भावनाएँ और वे बातें जो इस व्यवस्था के लिए खतरा हों, सीखने और ज्ञानार्जन के रास्ते में बाधा का काम करें? तब क्या, जब उभरती हुई इस असावधानी या बेध्यानी का अवलोकन करना ही ध्यान 'देना' हो? हम (विद्यार्थी और शिक्षक दोनों) किस तरह इस प्रस्ताव को ध्यान से देखकर उसके साथ खेल सकते हैं, उसे अलग-अलग तरह से विश्लेषित कर सकते हैं?

हमारे अनुभवों की प्रकृति क्या है और अनुभवकर्ता कौन है?

यह सवाल ऐसा सवाल नहीं प्रतीत होता जिस पर शिक्षकों और विद्यार्थियों को सोचने की जरूरत हो। इसके बारे में कोई भिक्षु, उपासिका या तपस्वी तो सोच सकते हैं, लेकिन शायद विद्यार्थी तो नहीं! लेकिन शिक्षा में इन सवालों से जूझने की सम्भावना दिखाई देती है। ये सवाल महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि हमारा 'स्वत्व', हमारा 'अहं' ही तो वह लेंस है जिसके बीच से गुजरकर संसार का हमारा अनुभव प्रसाधित होता है, एक प्रक्रिया से गुजरकर तैयार होता है। और हम इन अनुभवों के बारे में इतना कम समझते प्रतीत होते हैं क्योंकि हम स्वयं लेंस के बारे में पर्याप्त कुछ नहीं सीखते! क्या सीखा जा रहा है और किस तरह उसे और बेहतर सीखा जा सकता है, एक अच्छी शिक्षण प्रक्रिया पक्के तौर पर इस बारे में हमारी जिज्ञासा को (एक अच्छे उत्प्रेरक, यानी शिक्षक, के माध्यम से) बढ़ाती है। इससे भी महत्त्वपूर्ण है कि कौन सीख रहा है, आत्मकथनात्मक स्वत्व के वृत्तांत की रूपरेखा को देखना, और उस स्वत्व और अहं (यानी उस खुद) को देखना जो किसी अन्य के सम्बन्ध में निरन्तर हमारी भूमिका या व्यवहार को तय करता है - वह स्वत्व या अहं जो बार-बार स्वयं को प्रदर्शित करता है, शिक्षक या विद्यार्थी या अभिभावक या किसी भी अन्य रूप में।

इस व्यक्तिगत अहं के मस्तिष्क की और स्वयं तथा संसार के बारे में सत्य के रूप में एकत्र किए जाने वाले छोटे-छोटे कथनात्मक तथ्यों की, प्रकृति और स्वभाव क्या है? हम विद्यार्थियों के साथ इस सबके बारे में बात कर सकते हैं। यह ऐसे सोच-विचार को खोल सकता है जो स्कूल से शुरू होकर पूरा जीवन हमारे सीखने पर प्रभाव छोड़ सकता है।

अच्छी शिक्षा

हमें अक्सर कक्षा में और मंथर गति से चलते जीवन में अच्छे शिक्षक मिल जाते हैं। एक अच्छे शिक्षक के माध्यम से अच्छा शिक्षण एक चिंगारी सुलगाता है, एक जिज्ञासु मस्तिष्क को जन्म देता है, अच्छी शिक्षा सम्भव बनाता है, शिक्षा जो बस विशेष विषयों के ज्ञान के क्षेत्र तक सीमित नहीं है, एक ऐसी शिक्षा जो निरन्तर अवलोकन और अपने भीतर और बाहर के संसार को सुनने को जिन्दा रखती है।

कृष्ण हरेश

कृष्ण हरेश बेंगलूरु की सरहद पर स्थित एक छोटे से स्कूल सेण्टर फॉर लर्निंग (www.cfl.in) में कार्यरत हैं। उन्हें विद्यार्थियों के साथ काम करना अच्छा लगता है। वे मनोविज्ञान, काष्ठकला और थियेटर के बारे में पढ़ाते हैं। उनसे kruxys@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। यह लेख 'लर्निंग कर्व, अंक-26, फरवरी 2017 में प्रकाशित 'ऑन गुड टीचर एंड लर्निंग : कृष्ण हरेश' का रमणीक द्वारा किया गया अनुवाद है। प्रस्तुत लेख 'टीचर्स ऑफ इंडिया' से साभार।

बच्चों को सिखाएँ लाइफ स्किल

कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनपर लिखना खुद की आत्मा पर कुफ्र तोड़ने जैसा है, सूरत की बिल्डिंग में आग, 21 बच्चों की मौत, आग और घुटन से घबराए बच्चों का इससे भयावह वीडियो आज तक नहीं देखा, इससे ज्यादा छलनी मन और आत्मा आज तक नहीं हुई। फिर भी लिखूँगी...क्योंकि हम सब गलत हैं, सारे कुएँ में भाँग पड़ी हुई है। हमने किताबी ज्ञान में ठूँस दिया बच्चों को, नहीं सिखा पाए लाइफ स्किल। नहीं सिखा पाए डर पर काबू रख शांत मन से काम करना।

मम्मा डर लग रहा है...एग्जाम के लिए सब याद किया था लेकिन एग्जाम हॉल में जाकर भूल गया...कुछ याद ही नहीं आ रहा था। पाँव नम थे...हाथों में पसीना था...आप दो मिनट उसे दुलारते हैं...बहलाने की नाकाम कोशिश करते हैं फिर पढ़ लो- पढ़ लो- पढ़ लो की रट लगाते हैं। सुबह 8 घंटे स्कूल में पढ़कर आए बच्चे को फिर 4-5 घंटे की कोचिंग भेज देते हैं। जिंदगी की दौड़ का घोड़ा बनाने के लिए, असलियत में हम उन्हें चूहादौड़ का एक चूहा बना रहे हैं। नहीं सिखा पा रहे जीने का तरीका- खुश रहने का मंत्र, साथ ही नहीं सिखा पा रहे लाइफ स्किल। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और शांतचित्त होकर जीवन जीने की कला नहीं सिखा पा रहे हैं। इसके लिए सिर्फ और सिर्फ हम पालक और हमारा समाज जिम्मेदार है।

आयुष को पाँच साल की उम्र में मैं न्यूज़ीलैंड ले गई थी, 9 साल की उम्र में वापस इंडिया ले आई थी। वहां उसे नर्सरी क्लास से फस्ट-एड से लेकर आग लगने पर कैसे खुद का बचाव करें, फीलिंग सेफ, फीलिंग

स्पेशल (चाइल्ड एब्यूसमेंट)। पानी में डूब रहे हों तो कैसे खुद को ज्यादा से ज्यादा देर तक जीवित और डूबने से बचाया जा सके... जैसे विषय हर साल पढ़ाए जाते थे। फायरफाइटिंग से जुड़े कर्मचारी और अधिकारी हर माह स्कूल आते थे। बच्चों को सिखाया जाता था विपरीत परिस्थितियों में डर पर काबू रखते हुए कैसे एक्ट किया जाए। ह्यूमन चेन बनाकर कैसे एक-दूसरे की मदद की जाए। हेल्पिंग हैंड से लेकर खुद पर काबू रखना ताकि मदद पहुंचने तक आप खुद को बचाए रखें। हम नहीं सिखा पा रहे यह सब, नहीं दे पा रहे बच्चों को लाइफ स्किल, विपरीत परिस्थितियों से बचने के तरीके।

सूरत की ही घटना देखिए, हमारे बच्चे नहीं जानते थे कि भीषण आग लगने पर वे कैसे अपनी और अपने दोस्तों की जान बचाएँ, नहीं सीखा हमारे बच्चों ने थ्री-आर का रूल (गेट डाउन, गेट क्राउल, गेट आऊट) जो 3 साल की उम्र से न्यूजीलैंड में बच्चों को सिखाया जाता है, आग लगे तो सबसे पहले झुक जाएँ, आग हमेशा ऊपर की ओर फैलती है। गेट क्राउल, घुटनों के बल चलें, गेट आउट, वो विंडो या दरवाजा दिमाग में खोजें जिससे बाहर जा सकते हैं, उसी तरफ आगे बढ़ें, जैसा कुछ बच्चों ने किया, खिड़की देख कर कूद लगा दी, भले ही वे अभी हास्पिटल में हों लेकिन जिंदा जलने से बच गए। लेकिन यहाँ भी वे नहीं समझ पा रहे थे कि वे जो जींस पहने हैं, वह दुनिया के सबसे मजबूत कपड़ों में गिनी जाती है। कुछ जींस को आपस में जोड़कर रस्सी बनाई जा सकती है। नहीं सिखा पाए हम उन्हें कि उनके हाथ में स्कूटर-बाइक की जो चाबी है उसके रिंग की मदद से वे दो जींस को एक रस्सी में बदल सकते हैं। काफी सारी नॉट्स हैं जिन्हें बाँधकर पर्वतारोही हिमालय पार कर जाते हैं, फिर चोटी से उतरते भी हैं। वही कुछ नॉट्स तो हमें स्कूलों में घरों में अपने बच्चों को सिखानी चाहिए। सूरत हादसे में बच्चे घबराकर कूद रहे थे। शायद थोड़े शांत मन से कूदते तो इंज्युरी कम होती। एक-एक कर वे बारी-बारी जंप कर सकते थे। उससे नीचे की भीड़ को भी बच्चों को कैच करने में आसानी होती। मल्टीपल इंज्युरी कम होती, हमारे अपने बच्चों की।

आज आपको मेरी बातों से लगेगा, ज्ञान बाँट रही हूँ, लेकिन सूरत के हादसे के वीडियो को बार-बार देखेंगे तो समझ में आएगा। एक शांतचित्त व्यक्ति ने बच्चों को बचाने की कोशिश की। वो दो बच्चों को बचा पाया, लेकिन घबराई हुई लड़की खुद को संयत ना रख पाई और.... अच्छे से याद है, पापाजी कहते थे मोना कभी आग में फँस जाओ तो सबसे पहले अपने ऊपर के कपड़े उतार कर फेंक देना, मत सोचना कोई क्या कहेगा। क्योंकि ऊपर के कपड़ों में आग जल्दी पकड़ती है। जलने के बाद वह जिस्म से चिपक कर भीषण तकलीफ देते हैं, वैसे ही यदि पानी में डूब रही हो तो खुद को संयत करना, साँस रोकना, फिर कमर से नीचे के कपड़े उतार देना क्योंकि ये पानी के साथ मिलकर भारी हो जाते हैं, तुम्हें सिंक (डुबाना) करेंगे। जब जान पर बन आए तो लोग क्या कहेंगे कि चिंता मत करना, तुम क्या कर सकती हो सिर्फ यह सोचना। जो बच्चे बच ना पाए, उनके माँ बाप का सोच कर दिल बैठा जा रहा है। मेरे एक सीनियर साथी ने बहुत पहले कहा था- बच्चा साइकिल लेकर स्कूल जाने लगा है, जब तक वह घर वापस नहीं लौट आता, मन घबराता है। उस समय मैं उनकी बात समझ नहीं पाई थी। जब आयुष हुए तब समझ आया, आप दुनिया फतह करने का माद्दा रखते हो। अपने बच्चे की खरोंच भी आपको असहनीय तकलीफ देती है।

इस लेख का मतलब सिर्फ इतना ही है कि हम सब याद करें हिंदी पाठ्यपुस्तक की एक कहानी, जिसमें एक पंडित पोथियाँ लेकर नाव में चढ़ा था। वह नाविक को समझा रहा था- अक्षर ज्ञान-ब्रह्म ज्ञान न होने के कारण वह भवसागर से तर नहीं सकता। उसके बाद जब बीच मझधार में उनकी नाव डूबने लगती है तो पंडित की पोथियाँ उन्हें बचा नहीं पातीं। गरीब नाविक उन्हें डूबने से बचाता है, किनारे लगाता है। हम भी अपने बच्चों को सिर्फ पंडित बनाने में लगे हैं। उन्हें पंडित के साथ नाविक भी बनाइए जो अपनी नाव और खुद का बचाव स्वयं कर सकें।

कुकुरमुत्ते की तरह उग आए कोचिंग संस्थान न बदलेंगे। इस तरह के हादसे होते रहे हैं, आगे भी हो सकते हैं। बचाव एक ही है। हमें अपने बच्चों को जो लाइफ स्किल सिखानी है। आज रात ही बैठिए अपने बच्चों के साथ। उनके कैरियर को गूगल करते हैं न, लाइफ स्किल को गूगल कीजिए। उनके साथ खुद भी समझिए, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य के साथ क्या-क्या किया जाए। याद रखिए जान है तो जहान है।

गणपति विसर्जन समय की एक घटना मुझे याद है। हमारी ही कॉलोनी के एक भइया डूब रहे थे, दूसरे ने उन्हें बाल से खींचकर बचा लिया। वे जो दूसरे थे न उन्हें लाइफ स्किल आती थी। उन्होंने अपना किस्सा बताते हुए कहा था कि डूबते हुए इंसान को बचाने में बचानेवाला भी डूब जाता है, क्योंकि उसे तैरना आता है बचाना नहीं। मुझे मेरे स्विमिंग टीचर ने सिखाया है कि कोई डूब राह हो तो उसे खुद पर लदने ना दो। उसके बाल पकड़ों और घसीटकर बाहर लाने की कोशिश करो। यही तो छोटी-छोटी लाइफ स्किल हैं। काश, हम वीडियो बनाने और देखने के बजाए ये सब सीखें और बच्चों को सिखाएँ, पर हम भेड़चाल वाले हैं। अफसोस जताकर अगले हादसे का इंतजार करते हैं कि इसे भूल सकें। आशा है कि अब हम ऐसा नहीं करेंगे।

श्रुति अग्रवाल

विचारणीय

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी की सार्थकता

नवरत्न

हिन्दी शिक्षण चुनौतियाँ और संभावनाएँ विषय पर बात करने से पहले यदि इसकी भूमिका से शुरुआत करूँ तो आज इस विषय में कोई संशय नहीं है कि हिन्दी भाषा का इन दो दशकों में जबरदस्त विस्तार हुआ है। हिन्दी न केवल विश्व की चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बनकर उभरी है, बल्कि संचार माध्यमों और सिनेमा लेखन में भी हिन्दी एक जबरदस्त औजार बनकर आई है। आज हिन्दी में वह ताकत है जो आपको पैसा और शौहरत के साथ-साथ एक सुन्दर करियर भी दे सकती है। प्रिंट माध्यमों के साथ-साथ, श्रव्य और दृश्य माध्यमों में हिन्दी भाषा को लेकर जबरदस्त उत्साह है, साथ ही कंप्यूटर और मोबाइल फोन के बढ़ते चलन ने हिन्दी में अवसरों की बरसात कर दी है। लेकिन विषय और क्षेत्र चाहे कोई भी हो, वो आपसे पूर्ण समर्पण की माँग करता है, साथ ही आपका उस विषय पर पूरा अधिकार भी होना चाहिए।

पिछले दिनों एक पुस्तक लोकार्पण के सिलसिले में कुछ महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों से मिलना हुआ तो हिन्दी व्याकरण के संबंध में कुछ सामान्य बातों पर चर्चा हुई तो अनेक चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। मसलन- हिन्दी वर्णमाला में अक्षरों की संख्या कितनी है? संयुक्त व्यंजन (क्ष, ज्ञ, त्र श्र) किन दो व्यंजनों से मिलकर बने हैं? कवर्ग के अन्तिम अक्षर 'ङ' और 'ड़' में क्या अन्तर है? यहाँ तक कि 'उज्ज्वल' शब्द में दोनों ज आधे क्यों आते हैं? जैसी सामान्य बातों पर कॉलेज के विद्यार्थी लगभग चुप थे और प्राध्यापकों को आश्चर्य हो रहा था कि उन्होंने भाषा की इन छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान ही नहीं दिया। फिर हमने प्रयोग के तौर पर कुछ सरकारी और गैरसरकारी स्कूलों की ओर रुख किया। मामला चौंकाने वाला था। यहाँ करीब छब्बीस स्कूलों (बारह निजी तथा चौदह सरकारी, अर्द्ध-सरकारी) में छात्र-छात्राओं और अध्यापकों से बातचीत के दौरान यह सामने आया कि नौंवी-दसवीं में लगभग पूरा व्याकरण पाठ्यक्रम में होने के बावजूद विद्यार्थियों को अनेक सामान्य सी बातों का नहीं पता। इस सिलसिले में जब विषय को और भी गंभीरता से लिया गया तो सामने आया कि प्रदेश के ज्यादातर स्कूलों में हिन्दी भाषा हरियाणवी में पढ़ाई जाती है, जिससे बच्चे का उच्चारण अशुद्ध होता है। और संस्कृत-हिन्दी के बारे में प्रसिद्ध तथ्य है कि ये भाषाएँ विश्व भी सर्वाधिक विज्ञान सम्मत भाषाएँ हैं तथा जैसी बोली जाती हैं वैसी ही लिखी जाती हैं, अतः ज्यादातर विद्यार्थी हिन्दी अशुद्ध लिखते हैं। हिन्दी-संस्कृत भाषाओं के बारे में एक और रोचक तथ्य है कि इनके उच्चारण का प्रभाव उच्चारक के शरीर, मन और बुद्धि पर भी उच्चारण के समय पड़ता है। यानि संस्कृत भाषा में अनेक श्लोक ऐसे हैं जिनके शुद्ध उच्चारण से किसी भी व्यक्ति को करुणा, क्रोध, काम, प्रेम और ध्यान जैसी उदात्त भाव दशाओं में ले जाया जा सकता है अथवा हिन्दी में अनेक कविताएँ ऐसी हैं, जिन्हें शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ा जाए तो वीर रस को जाग्रत किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अशुद्ध उच्चारण के कारण कविता अथवा गद्य विद्यालय अथवा महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थी को वहाँ तक तो ले ही नहीं जाती जहाँ तक कविता अथवा गद्य उससे मांग करते हैं।

हिन्दी भाषा की वर्णमाला अथवा स्वर व्यंजनों के उच्चारण स्थान पर जब विचार करते हैं तो वैयाकरणों या व्याकरण आचार्यों की मेधा पर आश्चर्य होता है कि कैसे उन्होंने सालों साल चिंतन मनन करके इन अक्षरों के उच्चारण स्थानों का निर्धारण किया। हिन्दी और संस्कृत में प्रत्येक अक्षर की ध्वनि शरीर के एक आंतरिक भाग अथवा बिन्दु को प्रभावित करके पैदा होती है। जैसे 'ह' अक्षर को 'नाभि' के प्रयोग के बिना उच्चारित नहीं किया जा सकता। मतलब जब 'ह' का उच्चारण होगा तो 'नाभि' में हरकत अवश्य होगी और एक विशेष प्रकार की ऊर्जा पैदा होती है। इसी प्रकार जब हम 'क' बोलते हैं तो साँस छोड़ने से पहले हमें गले को दबाना पड़ता है और साँस के साथ 'अ' भी बोलना पड़ता है। इसी प्रकार 'म' के उच्चारण में दोनों 'ओंठ' मिलाकर तुरंत खोलने भी पड़ते हैं तथा 'अ' का उच्चारण कर साँस को नाक से निकालना पड़ता है। यदि ओंठ नहीं खोलेंगे तो साँस सीधी नाभि से टकराकर पूरे मस्तिष्क में झनझनाहट पैदा करती है तथा पूरे शरीर में ऊर्जा पैदा होती है। प्राणायाम विज्ञान में भ्रामरी इसका सशक्त उदाहरण है। यानि हिन्दी भाषा का उच्चारण इसका जरूरी कौशल है। और हम अब तक चारों कौशल यथा लिखना, पढ़ना, बोलना और सुनना में से सिर्फ लिखना, पढ़ना पर ही केवल जोर दे पाए। सुनना, बोलना कौशल को विकसित नहीं कर पाए। परिणामतः प्रदेश के लगभग सभी स्कूलों में ज्यादातर अध्यापकों के साथ विद्यार्थी भी हरियाणवी टोन के साथ हिन्दी पढ़ता-पढ़ाता है। अतः अब समय आ गया है जब भाषा अध्यापक के चयन में भाषायी कौशलों में उच्चारण संबंधी कौशल जरूरी कसौटी मान कर चलना पड़ेगा तथा साथ ही भाषा की परीक्षाओं में उच्चारण स्थान के लिए अतिरिक्त प्रायोगिक परीक्षाओं का प्रावधान करना पड़ेगा। असल में गलत उच्चारण से एक ऐसी समस्या पैदा हो गई है जब इलेक्ट्रोनिक मीडिया अथवा टीवी पत्रकारिता में बहुत ज्यादा अवसर बढ़ने के बावजूद भी हमें कोई लाभ नहीं हुआ और ज्यादातर चैनलों के एंकर बिहार, दिल्ली और उत्तर प्रदेश से हैं। जबकि यदि उच्चारण शुद्ध हो तो ये हमारे हरियाणा के भी हो सकते थे। बढ़ते अशुद्ध उच्चारण तथा घटते भाषायी करियर का यह

भी दुष्प्रभाव रहा कि विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में भाषा के विद्यार्थी घटे, शोध कार्यों का स्तर गिरा तथा भाषा ने अपनी आब को खो दिया। आज विज्ञान, गणित अथवा तकनीकी के विद्यार्थी को भाषा के विद्यार्थी के मुकाबले थोड़ा श्रेष्ठ आँका जाता है। अतः बोलना और सुनना कौशल को विकसित करके हम विद्यालयों में प्रारंभिक कक्षाओं में ही विद्यार्थी का इस और विकास कर सकते हैं। मसलन अब पहली कक्षा के विद्यार्थी को ककहरा पढ़ाते वक्त ही प्रत्येक वर्ग का पंचमाक्षर का उच्चारण स्थान नासिका है। अतः इसी नियम के तहत 'ङ' तथा 'ड़' में अन्तर स्पष्ट होता है। इसी प्रकार (ं) अनुस्वार और विसर्ग (:) दो अयोगवाह और हैं जिनका उच्चारण आधे म् और आधे ह् के समान होता है और जो किसी भी स्वर के पीछे आते हैं - जैसे - 'संसार' और 'दुःख में। आश्चर्य की बात यह भी है दुख शब्द को जब (दुःख) विसर्ग के साथ उच्चारित करते हैं तो नाभि पर विशेष प्रकार की चोट पड़ती है और सचमुच में दुःख की प्रतीति होती है। अतः इस प्रकार स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन, ऊष्म, घोष, अघोष, अल्प प्राण, महा प्राण, शुष्क और मृदु व्यंजनों पर जब गहराई से विचार करते हैं तो इनके उच्चारण स्थानों के संबंध में अनेक वैज्ञानिक तथ्य सामने आते हैं, जिनका प्राथमिक ज्ञान विद्यार्थी को होना चाहिए ताकि आगे चलकर वह इन तथ्यों को विस्तार दे सके।

लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि ज्यादातर सरकारी और निजी विद्यालयों में 'हिन्दी प्रवेशिका' स्तर पर अत्यन्त छोटी-छोटी बातों पर (हालांकि वे बातें बड़ी हैं) भी ध्यान नहीं दिया जाता। प्रस्तुत आलेख को तैयार करते हुए बहुत से प्राथमिक स्तर के अध्यापकों से बातचीत हुई। उन्हें उर्दू और फारसी भाषाओं से आगत वर्णों-यथा- ज़, फ़, ग़ इत्यादि की कोई जानकारी नहीं थी। यहाँ तक कि उन्होंने ''ढक्कन'' शब्द के प्रथम अक्षर 'ढ' के नीचे नुक्ता नहीं आता और 'चण्डीगढ़' शब्द अन्तिम अक्षर 'ढ़' के नीच नुक्ता आता है, इस बात पर भी विचार नहीं किया था। ग्रामीण परिवेश से आए ज्यादातर अध्यापक श, स, ष के उच्चारण में कोई फर्क नहीं करते, परिणामतः प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी गलत उच्चारण सीखते हैं तथा बड़ी कक्षाओं में जाकर भी शहर को 'सहर', वर्षा को 'वरसा' और सड़क को 'शड़क' बोलते हैं। यह भी देखने में आया कि समाचार पत्रों के क्षेत्रीय पृष्ठों ने स्थिति को बिगाड़ने में बड़ी भूमिका अदा की है। हिन्दी भाषा के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों के क्षेत्रीय पृष्ठों के लिए समाचार सामग्री लोकल लेवल पर कम पढ़े लिखे व अगंभीर युवक-युवतियाँ लिखते हैं। वे 'उपरोक्त', स्त्रोत, आरोपित जैसे गैर मानक व अशुद्ध शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं। उपरोक्त (उपरि+उक्त=उपर्युक्त) कोई शब्द नहीं होता। स्त्रोत (स्रोत) कोई शब्द नहीं होता। यहाँ तक कि कोर्ट में पुलिस 'आरोपी' को पेश करती है, न कि 'आरोपित' को।

लिखे हुए का असर ज्यादा होता है, बजाए बोले हुए के। अतः प्राथमिक स्तर पर अध्यापक क्षेत्रीय पृष्ठों में पढ़ी गई सामग्री से सीधे-सीधे प्रभावित होता है तथा वही गैर मानक सामग्री विद्यार्थियों तक पहुँचाता है। इसी कड़ी में बहुत से अध्यापकों से जब बात की गई कि हिन्दी वर्णमाला में वर्ण कितने हैं - तो उनका जवाब था चवालीस। ग्यारह स्वर और तेतीस व्यंजन। अब उनसे पूछा गया कि हिन्दी वर्ण माला में अक्षर कितने हैं, तो भी उनका जवाब था तेतीस। यानि उन्होंने कभी इस बात पर विचार ही नहीं किया कि 'अक्षर' और वर्णों में फर्क। और अक्षरों की संख्या तो छप्पन व कहीं-कहीं सत्तावन ठहरती है। उदाहरणार्थ देखें-

-	स्वर अ से औ तक	-		11
	क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग			25
	य से ह (शुष्क)			8
				44
	मिश्रित/संयुक्त क्ष, ज्ञ, त्र, श्र			4
	आगत -	ग़, ज़, फ़, ल़		4
		ड़, ढ़		2
	अनुस्वार/विसर्ग	अं, अः		2
				56
	कहीं, कहीं 'श्र' के साथ 'स्र' को		+	1
				57

यानि (श्+र=श्र) तथा (स्+र=स्र) अलग देखा जाने लगा है। जैसे श्रोत यदि प्राकृतिक है तो स्रोत लिखा जाने लगा है। जैसे कोयला प्राकृतिक स्रोत है जबकि सूचना का 'श्रोत' किसी व्यक्ति आधारित होता है, अतः यह श्रोत लिखा जाने लगा है। इसी कड़ी में एक और अहम् सवाल अक्षरों की बनावट, लिखावट तथा लिखने की गति से है। अक्सर यह देखा गया है कि अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी भाषा लिखने में विद्यार्थी की गति कम होती है। उसका बड़ा कारण सामने आया कि बच्चों को प्राथमिक स्तर पर ही अक्षर की उचित बनावट तथा लिखते हुए अक्षर को शुरू कहाँ से करना है, नहीं सिखाया जाता। बाद में फिर वही गलत बनावट उसकी आदत हो जाती है, तथा ताउम्र चलती है। अतः प्रारंभ में ही बच्चे को हिन्दी अध्यापक द्वारा यह बताया जाना चाहिए कि जब किसी भी अक्षर विशेष को एक खास तरह से शुरू करते हैं तो वह सुन्दर भी दिखता है तथा जल्दी भी लिखा जाता है।

बहुत से विद्वान हिन्दी के 'हिंगलिशीरकरण' से चिन्तित नजर आते हैं लेकिन इस विषय में समग्र रूप से विस्तार मंथन करें तो पाते हैं कि हिंगलिशीकरण से हिन्दी का दायरा बढ़ रहा है। वैसे भी हाल ही में हुए मॉरीशस में हिन्दी सम्मेलन से हिन्दी के भूमण्डलीकरण संबंधी अनेक सुखद आँकड़े निकलकर आए। दुनिया में जहाँ आज महाद्वीपों, उपमहाद्वीपों और देशों के बीच अन्तर कम होते जा रहे हैं, वहीं आपस में एक दूसरे की बोली भाषाओं के बीच नाते कायम हो रहे हैं। यही वजह है कि हिन्दी अब सिर्फ भारत और भारतवासियों की भाषा नहीं बल्कि दूसरे देशों के शोधार्थी विद्वान भी हिन्दी को सीख समझ रहे हैं, शोध कर रहे है। इनमें बहुत से विद्वान हमारे आध्यात्मिक साहित्य को सीख समझ रहे हैं, रसखान, कबीर, सूरदास, मीरा और कृष्ण को कंठस्थ कर रहे हैं। पूर्णिमा पाटिल ऑस्ट्रेलिया में चिन्मयानन्द मिशन की बाल विहार संस्था में हिन्दी शिक्षिका हैं तथा वहाँ वे हिन्दी अक्षर ज्ञान से लेकर कहानियों, कहावतों और व्याकरण के पोस्टर, पुस्तकों, चित्रों के माध्यम से बच्चों को हिन्दी सिखा रही हैं। इसी तरह श्रीलंका की मात्सा सेव्वेनंदी जो पेशे से चित्रकार हैं, लेकिन हिन्दी को लेकर इतनी उत्साहित है कि हिन्दी अध्यापिका बनना चाहती हैं। आस्ट्रेलिया से ही डॉ.रिचर्ड बार्ज आस्ट्रेलियन नेशनल विश्वविद्यालय, केनबरा से हिन्दी-उर्दू के प्रोफेसर पद से रिटायर हो चुके हैं तथा अब भी हिन्दी, उर्दू, अवधी, ब्रज, भोजपुरी भाषाओं का पठन-पाठन कर रहे हैं। डॉ.पीटर फ्रेडलैंडर ने आस्ट्रेलिया की केनबरा नेशनल यूनिवर्सिटी से रैदास पर शोध कार्य किया है। इटली के मार्को जॉली फरोंरेदार हिन्दी बोलते हैं तथा इन्होंने प्रख्यात हिन्दी कथाकारों, साहित्यकारों को खूब पढ़ा है। इसी तरह जापान के हिंदेआकि इशिदा दाईतो बुंका विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के पढ़े हुए हैं तथा बताते हैं कि उन दिनों वे हिन्दी साहित्य के बड़े-बड़े साहित्कारों विद्वानों जैसे जैनेन्द्र कुमार, अमृतराय, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, अमृतलाल नागर, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, भीष्म साहनी आदि से मिले जो उनके लिए सौभाग्य की बात है। अपनी इन मुलाकातों को वे दुनिया का सबसे अमूल्य खजाना मानते हैं। प्रो.मार्को ने तो इटली में हिन्दी से संबंधित 'व्यापार केन्द्र' स्थापित किया है जिसके माध्यम से भारत में होने वाली व्यापारिक गतिविधियों से इटली के युवा परिचित हो सकें। वे उन छात्रों को हिन्दी साहित्य पढ़ाते हैं जो अपने ज्ञान और कौशल विकास के उद्देश्य से इस भाषा को सीखने की जिज्ञासा रखते है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज दुनिया में मंदारिन, अंग्रेजी और स्पेनिश के बाद हिन्दी, चौथी सबसे ज्यादा बोली जानी वाली भाषा है। इसका दायरा बढ़ रहा है। शब्द संपदा बढ़ रही है। इंटरनेट के कारण इसके विस्तार की सीमाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन उत्तर भारत में विशेषकर हरियाणा प्रदेश के शिक्षा परिदृश्य में इसकी तस्वीर धुंधली क्यों है, यह चिंता का विषय है। इसके चारों कौशल-लिखना, पढ़ना, बोलना, सुनना अन्योन्याश्रित हैं। तो फिर विद्यालयों में बोलना और सुनना कौशलों का विकास कैसे हो? यह आज प्रत्येक हिन्दी विषय के अध्यापक को बैठकर विचार करना होगा।

सहायक प्रोफेसर
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
बिरहीं कलाँ (भिवानी)

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

विज्ञान की गतिविधियाँ हमेशा इस विषय को रोचक बनती हैं। खेल खेल में विज्ञान शृंखला में इस बार प्रस्तुत हैं कुछ और प्रयोग जिन्हें नाममात्र खर्च में किया जा सकता है।

1. आक के फल के विच्छेदन

विद्यार्थियों ने हवा में उड़ रहे आक के बीजों को देख कर पूछा- ये क्या उड़ते रहता हैं सर? बताया गया-ये होते हैं आक के बीज जो उसके फल मे से निकलते हैं और उड़कर दूर दूर तक फैल जाते हैं । नया प्रश्न- उसके फल में कैसे बनते हैं? वे कैसे उड़ते हैं? इन सब के बारे में बताइये सर। इसके लिए उन्हे आक के फल का विच्छेदन करवाया गया।

मैंने उन्हें बताया कि विभिन्न प्रकार के पौधे अपनी वंश वृद्धि के लिए विभिन्न तरीकों से बीजों को फैलाते हैं। मुख्यतः बीज फैलाने की कुछ विधियाँ होती हैं। जैसे- एक विधि को चिटकना विधि कहते हैं जिसमें फलीनुमा फल चिटक के फट जाता है और उसके बीज दूर तक दो-दो मीटर दूर तक भी बिखर जाते हैं। कुछ विशेष प्रकार के बीज तो पशु-पक्षियों की सवारी करके फैलते हैं। हाथी, वन्य जीव व पक्षी बीजों को दूर-दूर तक पहुँचाते हैं। पक्षियों की बीट से भी बीज दूर-दूर तक सफर तय करता है। पानी भी बीजों को बहा कर बहुत दूर तक ले जाता है। इसीलिए नारियल पूरी दुनिया में समुद्र-तटों व समुद्र-तटीय क्षेत्रों पर उगा हुआ मिलता है। बीजों के फैलने की एक अन्य विधि भी होती है लाइंग सीड यानी उड़ने वाले बीज। आक या मदार का पौधा इसी प्रकार की बीजों वाले पौधों की श्रेणी में आता है। इसके बीज बहुत हल्के होते हैं बच्चों ने जब आक के फल को काटा (विच्छेदन किया) तो उन्होंने देखा कि इस फल की आन्तरिक संरचना बहुत ही सुंदर व अद्भुत है। आंतरिक संरचना में बीज आपस में जुड़े हुए थे। उसके अंदर पतले पतले सफेद रंग के बालों जैसी संरचना भी दिखी जो बीजों को हवा में उड़ा कर कई कई किलोमीटर दूर ले जाती हैं। इस प्रकार बच्चों ने प्रकृति के नजदीक जाकर बीजों के फैलने की विभिन्न विधियों को समझा और अपनी जिज्ञासा को शांत किया।

2. कोई डिब्बी तैरे, कोई जाए डूब

विक्स वेपोरब या उसके आकार की तीन डिबिया लीं। उनमें से एक मे चिकनी मिट्टी (क्ले) भरकर उनका भार इस प्रकार सेट किया कि वो पानी के बाल्टी में डूब जाए। उनमें से दूसरी डिबिया में पहली वाली से थोड़ी कम चिकनी मिट्टी भरी जिससे वो पानी से भरी बाल्टी में डालने पर न पूरी डूबे और न पूरी तरह से तैरे , यानी जल की सतह के साथ रहे। तीसरी डिबिया में कुछ नहीं डाला जिससे वह तैरती रही।

बच्चे हैरान थे। वे अंदाजा लगा रहे थे कि तीनों में जो सबसे भारी थी वो डूब गई, जो सबसे हल्की थी वो तैरती रही। लेकिन जो न पहली की तरह डूबी और न दूसरी की तरह जल के ऊपर तैरी! ये स्थिति ही उन्हें मेरी तरफ असमंजसपूर्ण तरीके से मुख़ातिब होने व वजह जानने के लिए मजबूर कर रही थी। अब यहाँ मुझे उनको आर्कमिडीज सिद्धांत से परिचित कराने का बढ़िया अवसर मिला।

आर्कमिडीज के अनुसार अब कोई वस्तु आंशिक या पूर्ण रूप से किसी द्रव में डुबोई जाती है तो उसके भार में कमी आ जाती है और भार में यह कमी वस्तु द्वारा हटाये गये

द्रव के भार के बराबर होती है।

किसी भी वस्तु का जल में डूबना, तैरना या जलमग्न होना, उस वस्तु के तरल माध्यम (माना पानी) में आंशिक या पूर्णतः डूबी हुई अवस्था में वस्तु पर लगने वाले उत्प्लावन बल उस वस्तु द्वारा विस्थापित तरल के भार के पर निर्भर होता है।

कुछ बालकों को बात समझ आयी और बाकी अपना सिर खुजलाने लगे। छठी कक्षा है भाई छठी, खेल बढ़िया है।

3. रंध्रों की स्लाइड बना कर सूक्ष्म दर्शी से देखें।

छठी कक्षा और सूक्ष्मदर्शी से देखना बच्चों को रोमांचित करने वाली दृश्य था। विज्ञान किट के साथ मिले माइक्रोस्कोप बच्चों के लिए विभाग द्वारा प्रदत्त उपहार साबित हुए।

उन्होंने विज्ञान किट से समान लेकर व स्कूल की क्यारी से रोहिओ (Rhoea) पौधे के पत्तों की झिल्ली निकाल कर उसे अपने हाथों से काट कर स्लाइड पर बिछाया व दो बूंद पानी ड्रॉपर से डाल कर स्लाइड को सूक्ष्मदर्शी के मंच पर रखा। थोड़ी सी फोकस व

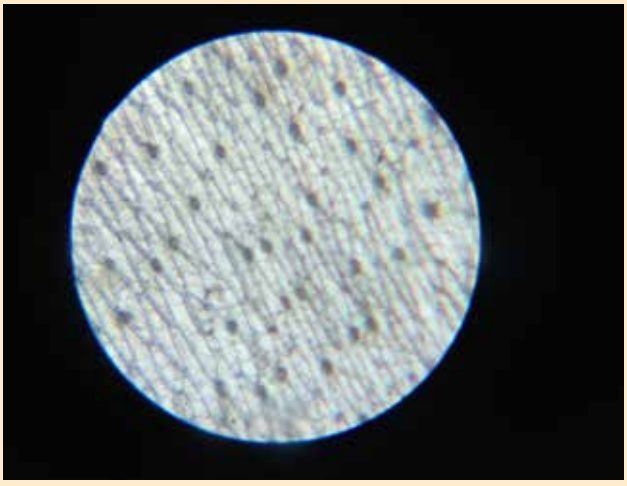

प्रकाश की एडजेस्टमेंट के बाद उनको जब रंध्र दिखे तो वो पाठ्यपुस्तक के पाठ एक के रंध्र के चित्र से तुलना करके उसके खुले व बन्द होने की चर्चा करते मिले। बच्चों के लिए सूक्ष्मदर्शी से अवलोकन करना उनमें विज्ञान के मजेदार विषय होने की अनुभूति करवा रहा था।

4. हवा में लटकता चुम्बक

अपनी विज्ञान पाठ्य पुस्तक के पृष्ठ पलटते-पलटते विद्यार्थियों को एक गतिविधि ने बहुत प्रभावित किया। कक्षा 6 का विद्यार्थी अरुण मेरे पास आया और उसने कहा कि सर मैं यह वाली गतिविधि बनाकर लाना चाहता हूँ। हालांकि मैंने उसको कहा कि जब यह पाठ पढ़ाया जाएगा तब बना लेना परंतु विद्यार्थी था कि मानने को तैयार नहीं था। अंततः मैंने उसे कहा कि ठीक है बना कर लाओ। उस विद्यार्थी ने लकड़ी, चुंबक प्लास्टिक का गिलास व धागे का इंतजाम करके हवा में झूलता चुम्बक गतिविधि बनाई। इस गतिविधि को देखकर बच्चे बहुत खुश हुए कि यह चुंबक किस प्रकार से हवा में लटक रहा है? विद्यार्थियों को यह भी जिज्ञासा थी कि अरुण ने चुंबक कहाँ से लिए। तब अरुण ने कक्षा में बताया कि उसने यह चुंबक अपनी मम्मी जी के पुराने पर्स में से निकाले। पर्स के फ्लैप को बंद करने के लिए मैग्नेटिक लॉक में लगाए जाते हैं। उसमें से जो रिंग मैग्नेट थी वह

उसने एक मोबाइल होल्डर बटुवे में से निकाली। बच्चे बहुत हैरान थे कि यह चुंबक हवा में कैसे लटक रहा है? उन्हें इस बात का अंदाजा तो था कि ऊपर वाला चुंबक शक्तिशाली है। वह नीचे वाले चुंबक को अपनी ओर खींच रहा है। बच्चे यह पूछ रहे थे कि अगर हम इस चुंबक की जगह कोई लोहे की कील धागे से बाँध दें तो क्या वह भी हवा में लटकेगी? बच्चे आपस में चर्चा कर रहे थे। अब अरुण ने कहा कि हाँ ऐसा हो सकता है। चुंबक हर चुंबकीय पदार्थ को अपनी ओर आकर्षित करती है तो वह लोहे की कील को भी अपनी ओर खींचेगी। बच्चों ने इसी प्रयोग में धागे के साथ लोहे की कील बांधकर अपनी कल्पना की प्रायोगिक पुष्टि की और वह बहुत खुश हुए।

हमारी विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें विभिन्न गतिविधियों से परिपूर्ण हैं। लगभग हर पाठ में औसतन 8 से 10 गतिविधियाँ जरूर हैं और इनको बनाने के लिए आवश्यक सामान साइंस किट्स में उपलब्ध है। विज्ञान अध्यापकों को साइंस किट्स का भरपूर प्रयोग करना चाहिए। बच्चों को वही गतिविधियाँ उनके आस पास उपलब्ध संसाधनों से बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होता है।

विज्ञान अध्यापक व विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप,खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

सौंख विद्यालय : विपरीत परिस्थितियों में सफलता की गाथा

हरियाणा के नूँह जिला में जहाँ बच्चों की ड्रॉप आउट दर बहुत अधिक है तथा बच्चों की अनुपस्थिति भी ज्यादा है, अभिभावकों एवं ग्रामवासियों का विद्यालय के प्रति रुझान कम है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों के बीच दृढ़ संकल्प शक्ति से सफलता की ऊँचाइयों को छूने वाले सौंख विद्यालय की विजय गाथा यहाँ प्रस्तुत है-

जिला मुख्यालय से 3 किलोमीटर दूर अरावली पहाड़ियों के पास स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय सौंख जोकि कभी उपेक्षित था व जर्जर हालत में गहरे तालाब में स्थित था, आज वह सभी के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है तथा जिला स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। इस स्कूल को विभिन्न पुरस्कारों से भी ब्लॉक और जिला स्तर पर नवाजा गया है और स्कूल पूरे जिले में अपनी एक पहचान बनाए हुए है। इस विद्यालय की सफलता की गाथा के पीछे जन-भागीदारी, पंचायत के सहयोग, मुख्याध्यापक का गतिशील नेतृत्व व अध्यापकों के बीच एकजुट प्रयास काम कर रहे हैं। साथ ही विद्यालय को शिक्षा प्रशासन, अन्य विभागों जैसे बिजली, जान- स्वास्थ्य, स्वास्थ्य, ब्लॉक पंचायत, इलाके के मुख्य व्यक्तियों के साथ-साथ एसआरएफ फॉउंडेशन की पूरी मदद भी मिली है। आज स्कूल में 450 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और कोई भी बच्चा स्कूल से बाहर नहीं है। प्रतिदिन नब्बे प्रतिशत बच्चे से अधिक बच्चे शिक्षा ग्रहण करने स्कूल आते है।

स्कूल का मुख्य-दवार बहुत ही आकर्षक है जो कि किसी का भी मन मोह लेता है। जिसका निर्माण समुदाय सरपंच और नजदीकी गाँवों के मुख्य लोगों की मदद दवारा मुख्याध्यापक दवारा कराया गया है। एसआरएफ फाउंडेशन की मदद से लेवलिंग कराई गई। पंचायत ने स्कूल की सफेदी व रंग-रोगन का कार्य बहुत ही ख़ूबसूरती से किया। इसके साथ-साथ स्कूल और समुदाय की सामूहिक सहयोग से विशाल स्टेज का निर्माण कराया गया। एसआरएफ फाउंडेशन दवारा स्कूल को हरा-भरा रखने के लिए एक विशाल पार्क बनाने में मदद की गयी जिसके चारों ओर श्री रहीश खान और श्री हामिद जी दवारा फूल और छायादार पौधे लगवाए गए और स्कूल की सुंदरता को और बढ़ाया गया। पार्क में घास को हरा-भरा करने के लिए पंचायत ने पानी के लिए बोर कराए और पूर्व मुख्याध्यापक श्री रहीश जी ने फव्वारे लगवाए इसके साथ-साथ समुदाय के लोगों ने रात में जाग कर इसमें प्रतिदिन पानी लगा कर घास को हरा-भरा किया। रहीश जी दवारा अपने पास से एक लाख साठ हज़ार की राशि स्कूल को सुंदर बनाने में खर्च की गई और स्कूल की चारदीवारी को भी ऊँचा करने के लिए प्रशासन से मदद ली। स्कूल में पार्क होने के कारण गाँव के युवा व बुजुर्ग शाम को विद्यालय के प्रांगण में टहलते हैं तथा पौधों व स्कूल की देखभाल करते हैं, कोई भी व्यक्ति अब स्कूल को कोई हानि नहीं पहुँचाता है।

स्कूल गेट पर वर्तमान मुख्याध्यापक श्री महिपाल द्वारा चौकीदार की व्यवस्था की हुई है ताकि कोई भी बच्चा बिना अनुमति के बाहर नहीं जा सकता। श्री महिपाल जी ने स्कूल के पार्क और स्कूल की सुंदरता को बना कर रखने के लिए एक माली की वयवस्था कर रखी है जिसकी जिम्मेदारी स्कूल और पंचायत दोनों ने ली है। स्कूल में किसी भी कार्य को करने के लिए सरपंच श्री निर्मला देवी उसके पिता श्री राजेंद्र जी और पूर्व सरपंच श्री जहीर खान जी अपने समुदाय के लोगो की मदद के साथ हमेशा तैयार रहते हैं।

स्कूल ने प्रशासन और एसआरएफ फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों से स्कूल में विभिन्न कार्य कराए है, जैसे लाइब्रेरी, लड़के व लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय, पीने के पानी के लिए व हाथ धोने के लिए सुविधा, बच्चों के लिए खेल का मैदान, पार्क की व्यवस्था, कंप्यूटर, साइंस लैब, मैथ लैब आदि। सभी बच्चों को बैठने के लिए डेस्क भी एसआरएफ़ फाउंडेशन और विभाग द्वारा दिया गए है।

लाइब्रेरी में बच्चों के बैठने की पूरी व्यवस्था के साथ-साथ 600 किताबें है और रीडिंग क्लब के माध्यम से किताबें बच्चों के कक्षा कक्ष तक पहुँचाई जाती हैं। किताबें प्रतिदिन बच्चों द्वारा पढ़ी जाती हैं जिससे कि बच्चों की रीडिंग दक्षता में बढ़ोतरी हुई है। किताबें लाइब्रेरी में लेवल के अनुसार लगी हुई हैं जिससे बच्चों को किताबें लेने और वापिस रखने में कोई परेशानी नहीं आती। इसका जिम्मा के अध्यापक को सौंपा हुआ है।

मैथ-लैब में गणित-सूत्र दीवारों कर लिखे हैं, जिससे सभी बच्चे देख कर सीख सकते हैं और तीन फ़ीट तक की दीवार को काले रंग में ब्लैकबोर्ड की तरह बनाया गया है जिससे बच्चे वहीँ पर अभ्यास भी कर सकें।

साइंस लैब में विभाग द्वारा दी गयी साइंस किट के साथ-साथ फाउंडेशन द्वारा प्रयोग किये जाने वाले सभी केमिकल्स और अन्य सामग्री भी दी गई है। विज्ञान अध्यापक द्वारा बच्चों को प्रतिदिन प्रयोग विधि से पढ़ाया जाता है जिससे साइंस के प्रति बच्चों का रुझान बढ़ा है।

ड्रॉप-आउट को काम करने के लिए प्रयास हो रहे हैं। खासतौर पर लड़कियों के लिए पर्याप्त शौचालय है। पानी की सुविधा है जिससे लड़कियों को कोई समस्या नहीं आती। इसके साथ-साथ पीने के पानी की और हाथ धोने की सुविधा के लिए बच्चों के कद के अनुसार नल लगाए गए है और हर समय पानी की सप्लाई रहती है।

स्कूल में शैक्षणिक स्तर को बढ़ाने के लिए डिजिटल कक्षा कक्ष और कंप्यूटर की पूरी व्यवस्था है, जिसमें एक्स्ट्रा मार्क्स कंटेंट जोकि एनसीईआरटी के अनुसार कक्षा प्रथम से बारहवीं तक के सभी विषयों और पाठ्यक्रम अनुसार हैं, के माध्यम और यू-टयूब के माध्यम से देख कर सीखने की विधि के अनुसार पढ़ाया जाता है। पूरे स्कूल में एसआरएफ फाउंडेशन द्वारा बाला

पेंटिंग पाठ्यक्रम के अनुसार कराई हुई है जिससे बच्चे घूमते-फिरते भी सीखते रहते हैं। अध्यापकों द्वारा बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा दी जाती और सभी कमरों को प्रिंट-रिच किया हुआ है। समय-समय पर बच्चों के पाठ के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है और फाउंडेशन द्वारा दी जा रही सभी बच्चों के लिए वर्कशीट पर बच्चों को प्रतिदिन अभ्यास कराया जाता है।

स्कूल और समुदाय का रिश्ता बहुत मजबूत होने के कारण वे प्रति माह स्कूल में या समुदाय में मीटिंग करते हैं और बच्चों की प्रगति साझा करते हैं। समय-समय पर अध्यापकों और स्कूल मैनेजमेंट कमेटी द्वारा गाँव का विजिट किया जाता है और अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाता है। पहले इस गाँव में कोई भी बच्चा बारहवीं पास नहीं था, लेकिन आज इस स्कूल से पढ़ कर एक लड़की स्नातक पास कर चुकी है और आज अपने गाँव में सरपंच के पद पर कार्य कर रही है। आज इस गाँव के शत-प्रतिशत बच्चे स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

विद्यालय में कचरा के उचित प्रबंधन तथा विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए गीला कचरा तथा सूखा कचरा डालने के लिए अलग-अलग पिट का निर्माण कराया गया है। मिशन रिसायकल के तहत स्वच्छता योजना के तहत स्कूल में गीले और सूखे कूड़े के लिए

अलग अलग हरे और नीले रंग के पिट्स बनवाए हैं और सभी बच्चों को अध्यापकों के माध्यम से प्रशिक्षित भी किया और और समुदाय में जागरूकता के लिए रैली का आयोजन भी समय-समय पर कारवाया गया है जिसमें जिला स्तर के जिला स्वच्छता प्रोग्राम मैनेजर श्री गोविन्द राम जी ने एसआरएफ और अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन के माध्यम से स्कूल में रिसाइकल करके एक गार्डन भी बनवाया गया है।

स्कूल में स्वच्छता समिति का गठन किया हुआ है जिसमें 20 बच्चों की एक समिति 6 कंपोनेंट्स पर काम करती है और प्रत्येक कॉम्पोनेंट के लिए तीन बच्चे कार्य करते हैं। इसमें एक हेड गर्ल और हेड बॉय होता है जोकि प्रतिदिन और मासिक चेकलिस्ट के अनुसार मासिक तौर पर मीटिंग करके योजना बनाते हैं। 6 कंपोनेंट्स स्कूल कक्षा कक्ष और परिसर की स्वच्छता, अनुशासन, स्वास्थ्य और सफाई, सामान का सही उपयोग, हाज़री और निरंतरता और शैक्षणिक कार्य पर बच्चों के दवारा बच्चों में नेतृत्व की भावना का विकास करने के लिए कार्य करते हैं। यह काम एक अध्यापक को दिया गया है, जिसकी पूर्ण रूप से सभी बच्चों के साथ मिल जुल कर स्कूल के सभी कार्यो का अवलोकन करके पूरा करने की पूर्ण जिम्मेदारी होती है।

स्कूल पर पूरी तरह से निगरानी रखने के लिए कैमरे लगवाए गए हैं जिनसे मुखिया एक ही नज़र में पूरे स्कूल पर निगरानी रख सकते हैं और बच्चों के शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए और अधिक प्रयास कर सकते हैं।

पढाई के साथ-साथ खेलों को बढ़ावा देने के लिए और बच्चों की रुचि जागृत करने के लिए भी कार्य किया जा रहा है और एसआरएफ फाउंडेशन व सनराइज दवारा बैडमिंटन ग्राउंड बनवाया गया जिसमे बच्चों को प्रतिदिन कोच के दवारा बैडमिंटन खेलने का अभ्यास करवाया जाता है। इसके साथ-साथ स्कूल में कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, हैंडबाल आदि के ग्राउंड हैं, जिनमें बच्चे खेलते हैं। इस स्कूल के बच्चों ने ब्लॉक और जिला स्तर पर बहुत खेलों में प्रथम स्थान हासिल किया है और राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओ में भी भाग लिया है। सभी आने जाने राहगीरी भी इस स्कूल को देख कर इसमें आराम करने के लिए थोड़ा समय बिताते हैं । छोटे बच्चों के लिए स्कूल में झूले लगवाए हुए हैं।

विद्यालय मुखिया के नेतृत्व कौशल के कारण स्कूल में सुविधाओं की देखभाल के साथ-साथ पठन स्तर में भी सुधार हुआ है जिसके परिणामस्वरूप स्कूल में प्रत्येक साल विद्यार्थियो की संख्या बढ़ रही है। वर्तमान में बच्चों की संख्या 280 (2016-17) से बढ़कर 480 (2019-20) हो गयी है।

स्कूल को सुन्दर बनाने में श्री रहीश खान और हामिद जी के साथ गाँव के अध्यापक बसीर जी और पूर्व सरपंच जहीर अब्बास और संक प्रेजिडेंट के साथ एसआरएफ फाउंडेशन का भरपूर योगदान है। वर्तमान मुख्याध्यापक श्री महिपाल जी बहुत ही कर्मठ और

ईमानदार छवि वाले हैं। उन्होंने अपने नेतृत्व में स्कूल के अध्यापको की टीम और सभी के साथ मिलकर स्कूल को आगे बढ़ाने में जी-जान से कोशिश की है।

स्कूल में समय-समय पर बच्चों और शिक्षकों को सम्मानित करने के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। श्री महिपाल जी दवारा एक मुहिम की शुरुआत की गयी जिसमें उन्होंने सबसे पहले अपने स्कूल के मेहनती अध्यापकों को सम्मानित किया और इसके बाद नजदीक के गाँवों के दो बेस्ट टीचर्स को ब्लॉक एजुकेशन अधिकारी को अपने स्कूल में बुला कर सम्मानित कराया गया। इसके अलावा सभी अपने सीआरसी में सम्मिलित पाँच गाँवों के बेस्ट अध्यापकों को सम्मानित किया और एक स्पेशल प्रोग्राम का आयोजन करके मिड-डे मील वर्कर्स, माली, चौकीदार आदि को सम्मानित किया। बड़े स्तर पर स्कूल के वार्षिक समारोह का आयोजन किया गया और बच्चों को विभिन्न कार्यों के लिए सम्मानित किया। इसके अलावा विद्यालय में सहयोग देने वाले लोगों को भी सम्मानित किया गया।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय सौंख एक बहुत अच्छे मुख्याध्यापक के नेतृत्व में बहुत ही गुणी अध्यापकों की टीम के साथ सभी अभिभावकों और ग्रामवासियों के सहयोग से सभी बच्चों को सफलता के पथ पर ले जाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेगा।

महीपाल सिंह
राजकीय माध्यमिक विद्यालय सौंख
जिला- फतेहाबाद

संस्कृत शिक्षक सुखदेव, उत्कृष्ट खो-खो प्रशिक्षक भी

प्रदीप मलिक

यह कोई मायने नहीं रखता कि सफलता पाने या दिलाने के लिए किसी डिग्री की जरूरत पड़ती हो। कई बार हमारे हौसले हमें उस मुकाम तक ले जाते हैं जहाँ तक हम जाने की सोचते भी नहीं। बशर्ते उस मंजिल को पाने के लिए नित हमें एक एक कदम चलना पड़ता है। कुछ ऐसा ही कारनामा कर दिखाया है राजकीय उच्च विद्यालय बलाना जिला पानीपत के संस्कृत अध्यापक सुखदेव सिंह ने। स्वयं बचपन से खो-खो में रुचि रखने वाले सुखदेव सिंह स्कूली बच्चों को अपने बलबूते खो-खो में पारंगत करने का बीड़ा उठाए हुए हैं। सबसे बड़ी और प्रेरक बात ये है कि वो निरंतर स्कूल समय के बाद और छुट्टी वाले दिन मैदान पर आकर स्कूली बच्चों को खो-खो के गुर सिखाते हैं। इसी का सुखद परिणाम ये है कि आज राजकीय उच्च विद्यालय बलाना जिला पानीपत के बच्चे राज्य स्तर पर ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहरा चुके हैं।

आज से लगभग दो वर्ष पहले जब उन्होंने राजकीय उच्च विद्यालय बलाना में कार्यभार ग्रहण किया तो वहाँ खेल तो दूर खेल का मैदान भी नहीं था। पर कहते हैं न जिसमें कुछ करने का जज्बा होता है तो वह रास्ता भी ढूँढ लिया करता है। शुरुआती दिनों में बड़ी कठिनाई हुई जिससे उन्हें तनिक भी लक्ष्य से भटकाव नहीं हुआ। बस निरन्तरता को बरकरार रखते हुए स्कूली बच्चों को प्रेरित करना शुरु किया। प्रारंभ में लगभग 10 बच्चों से खो-खो की शुरुआत करने वाले सुखदेव शास्त्री आज एक अच्छी खासी नर्सरी बना चुके हैं जहां न केवल बच्चों को निःशुल्क खो खो का प्रशिक्षण मिलता है अपितु उन्हें अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अपने निजी कोष से उन्हें फलाहार भी कराते हैं।

जब इस बारे सुखदेव शास्त्री से बात की गई तो उन्होंने बताया कि बचपन के शौक को जीवंत रखने के लिए वो स्कूल में बच्चों के बीच बच्चा बनकर खेलना पसंद करते हैं। एक और जहाँ उनका स्वास्थ्य सही रहता है वही दूसरी ओर उनके मानसिक विकास को बढ़ाने में खेल सहायक है। शुरुआत में केवल लड़कों को अभ्यास करवाना शुरू किया। धीरे-धीरे स्कूल में गाँव बलाना, इसराना व आसपास के बच्चे भी आने लगे। लड़कों को खेलता देख बेटियों के मन में भी खेल की भावना जागृत हुई। उनके मान, सम्मान व गरिमा को बढ़ाने के लिए एवं 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ-बेटी खिलाओ' के स्वप्न को सही मायने में साकार करने के लिए विद्यालय की एसएस अध्यापिका सुनीता जागलान से चर्चा की तो उन्होंने बेटियों का साथ देने की बात कही। फिर क्या था बेटियों को भी मैदान में उतारा और उन्हें खो-खो की बारीकियों से अवगत करवाया। देखते ही देखते बेटियाँ कब चैंपियन बन गई उन्हें भी नहीं पता चला। अपनी कठिन परिश्रम, निरंतर अभ्यास एवं दृढ़ संकल्प की बदौलत बेटियों ने उस मुकाम को हासिल किया जिसकी वजय से पानीपत से लगभग 18 किलोमीटर दूर स्थित गाँव बलाना को नई पहचान मिली। आज आलम ये है कि किसी भी प्रतियोगिता में जाने से पहले स्कूल स्तर पर चयन प्रक्रिया के माध्यम से टीम को चुना जाता है। इन बच्चों के सीखने के जज्बे की बदौलत और कुछ कर गुजरने की इच्छा से खो खो जैसे खेल में सफलता पाना मुश्किल न लगा।

सुखदेव शास्त्री ने अपने अनुभव साँझा करते हुए

बताया कि हमारे विद्यालय की टीम ने राज्य स्तरीय खो खो प्रतियोगिता में जीत का परचम लहराते हुए गाँव का नाम रोशन किया। खो-खो के मार्गदर्शक एवं संस्कृत अध्यापक सुखदेव शास्त्री ने बताया कि बच्चों की मेहनत के परिणामस्वरूप खंड स्तर की खेल प्रतियोगिता में अंडर 14 व अंडर 17 ग्रुप में लड़के व लड़कियों की टीम प्रथम रही। इसके बाद अंडर 14 लड़कियों की टीम जिला पानीपत में प्रथम व लड़को की टीम द्वितीय स्थान पर रही। विद्यालय की दो बेटियों आँचल व काफी ने राज्य स्तरीय टीम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय स्तर की खो-खो प्रतियोगिता में रोमा ने अंडर-14 में भाग लिया। राष्ट्रीय स्तर पर ही विद्यालय के छात्र साहिल ने अंडर-17 में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इसके साथ ही राज्य स्तरीय दौड़ प्रतियोगिता में तन्नू ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। जिसके फलस्वरूप उन्हें ग्राम पंचायत एवं सम्मानित ग्रामीणों के साथ साथ विद्यालय स्टाफ ने स्वागत करते हुए आँखों पर बैठाया।

हमारे विद्यालय के गौरव की बात है खो खो - मुख्याध्यापक सुरेंद्र कुमार

राजकीय उच्च विद्यालय बलाना के मुख्याध्यापक सुरेंद्र कुमार ने बताया कि सुखदेव शास्त्री जी के मार्गदर्शन में बच्चों ने अपने खेल की वजह से स्कूल का नाम व सम्मान बढ़ाया है। हमारे स्कूल के लिए खो-खो गौरव की बात व हमारी पहचान है। जहाँ भी हमारे बच्चों ने भाग लिया वहाँ उन्होंने अपनी काबिलियत के बलबूते पुरस्कार प्राप्त किये हैं। एक अध्यापक का अपने विषय में निपुण होने के साथ साथ हर क्रियाकलाप में सक्रिय रहना बड़े हर्ष व गौरव की बात है। सुखदेव शास्त्री की मेहनत व स्टाफ सदस्यों के सहयोग से हमारे विद्यालय को विभिन्न मंचों पर सम्मान मिला है।

बचपन बचाने व जीवन बनाने का है प्रयास - सुखदेव शास्त्री

इस बारे जब संस्कृत अध्यापक सुखदेव सिंह शास्त्री से बात की तो उन्होंने बताया कि खेल के माध्यम से बच्चों के बचपन को बचाने व उनके जीवन को बनाने का प्रयास किया है। उन्होंने बताया कि एक ओर जहाँ खेल अनुशासन सीखाता है वहीं दूसरी ओर टीम भावना का पाठ पढ़ाता है। बच्चों में एक दूसरे से सीखने की प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। बच्चों संग खेलकर मुझे खुशी व सुकून मिलता है। हमारे विद्यालय की टीम की मेहनत, स्टाफ सदस्यों के सहयोग व गाव वालों के प्यार से ये सब संभव हो पाया है। उन्होंने बताया कि अभ्यास सफलता की सीढ़ी है। इसके बलबूते हम अपनी मंजिल को पा सकते हैं जिसके सपने एक सफल इंसान देखता है।

कला अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इसराना, ज़िला-पानीपत

आईपीएस बनना चाहती है आरती सोनी

कुछ विद्यार्थी केवल पढ़ाई पर ही सारा ध्यान लगाते हैं तो कुछ खेल में अपना सारा समय गँवा देते हैं। कुछ पेंटिंग ही करते रहते हैं तो बहुत से ऐसे भी हैं जो कुछ नहीं करते। यानि किसी क्षेत्रा में अग्रणी नहीं होते, किन्तु जो विद्यार्थी ऊर्जावान हैं, उत्साही हैं, प्रतिभा के धनी हैं वे कई क्षेत्रों में एक साथ श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सबको चकित कर देते हैं। ऐसे विद्यार्थी जीवन में सबसे अधिक कामयाब रहते हैं जो बहुमुखी प्रतिभावान होते हैं। शिक्षा विभाग का भी मूल उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो। ऐसी ही एक प्रतिभाशाली छात्रा है आरती सोनी।

हिसार के उमरा गाँव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा आरती जहाँ पढ़ाई में अव्वल रहती हैं वहीं पेंटिंग, मेंहदी, नृत्य, रंगोली में भी नाम कमा रही हैं। फैशन डिजाइन में आरती की खास रुचि है। यात्राएँ करना इसे अच्छा लगता है। आरती ने मेंहदी में भी कई पुरस्कार जीते हैं। राष्ट्रीय स्तर के एडवेंचर कैम्प ,चेरथला केरल में भी इसने 'मेंहदी रचाओ' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करके वाह-वाही लूटी। इसके साथ-साथ नैशनल स्तर के इसी कैम्प में नृत्य प्रतियोगिता में अवार्ड जीत कर साबित कर दिया कि ये छात्रा नृत्य में भी अपना लोहा मनवा चुकी हैं। इसके अलावा खण्ड व जिला स्तर के कार्यक्रमों में अनेक बार श्रेष्ठ नृत्य करके सम्मान पा चुकी हैं। जब आरती नृत्य करती है, अपनी भाव-भंगिमाओं व एड़ी की थिरकन से सबका मन मोह लेती है। आरती ने अपनी सहपाठी अंजलि टाक के साथ अनेक बार नृत्य किया है। इस नृत्य में अंजलि पार्वती तो आरती शिव का नृत्य करती हैं। इन दोनों का नृत्य बड़ा मनमोहक नृत्य है। आरती एक अच्छी चित्रकार भी है। इसके चित्रों में जहाँ किशोर अवस्था की कुछ परिपक्वता झलकती है तो बाल मन की निश्छलता भी। पेंटिंग करते समय आरती कई तरह के रंगों का उपयोग कर लेती हैं।

रंगोली बनाने की कला में भी आरती माहिर है। आरती का नृत्य देखकर शिक्षा विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक राजीव प्रसाद भी इसके नृत्य की प्रशंसा कर चुके हैं। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार का कहना है कि आरती एक अच्छी नृत्यांगना है तो श्रेष्ठ कलाकार भी है। मेहंदी लगाने में तो यह छात्रा कमाल की दक्षता

दिखाती है। आरती अपनी सफलताओं के लिए अपने पिता हरिदर्शन, माता रेखा, प्राचार्या सरोज बाला तथा शिक्षकों का आशीर्वाद व सहयोग मानती है। आरती का लक्ष्य आईपीएस बनकर समाज से बुराइयाँ दूर करने का है। इसके लिए यह कड़ी मेहनत भी कर रही है।

- डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
एम.पी. रोही, जिला- फतेहाबाद

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो,

तुम सबको यह कविता तो याद होगी-' मछली जल की रानी है, जीवन इसका पानी है, हाथ लगाओ डर जाएगी, बाहर निकालो मर जाएगी।' लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि मछली रानी जल से बाहर निकलते ही मर क्यों जाती है? अगर नहीं, तो आइये, मैं आपको बताती हूँ-

मछली जलीय प्राणी है यह गिलों द्वारा श्वसन क्रिया करती है। गिल जल में घुली ऑक्सीजन को अवशोषित करके कार्बनडाईऑक्साइड बाहर निकालते है। मछली के थोड़ी देर के लिए जल से बाहर निकाल देने पर श्वसन क्रिया बंद हो जाती है। अतः वह मर जाती है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1. हमारे देश का राष्ट्रीय फूल कौन सा है?
उत्तर- कमल
2. हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?
उत्तर- पं. जवाहरलाल नेहरू
3. हरियाणा की राजधानी का नाम बताओ।
उत्तर- चंडीगढ़
4. किस शहर को 'पिंक सिटी' के नाम से जाना जाता है?
उत्तर- जयपुर
5. हमारे देश के राष्ट्रीय पक्षी का नाम बताओ।
उत्तर- मोर
6. वर्तमान में हरियाणा के मुख्यमंत्री कौन हैं?
उत्तर- श्री मनोहर लाल
7. वर्तमान में हरियाणा के शिक्षा मंत्री कौन हैं?
उत्तर- प्रो. रामबिलास शर्मा

पहेलियाँ

1.जल्दी पकड़े आग गैस वह, गुब्बारों में भरते।
इसके हल्केपन के कारण, गुब्बारे हैं उड़ते।।
2.मुक्त अवस्था में प्रकृति में, रहते तत्त्व तमाम।
एक तत्त्व का उनमें से तुम, बच्चो बूझो नाम।।
3.नाम कहो उस परिवर्तन का, हौले-हौले हो ले।
जंग लगा लोहे पर देता, उदाहरण हम बोले।।
4.शीशी टूटे, तीली जलती, यह ऐसा परिवर्तन।
इस परिवर्तन के होने में, लगते केवल कुछ क्षण।।
5.जिसकी हमें जरूरत होती, लाभ हमें पहुँचाता।
ऐसे परिवर्तन की तुमको, करनी है पहचान।।
6.दिल की धड़कन किस परिवर्तन, से होती है बोलो।
राज नहीं यह राज रह गया, राज आज यह खोलो।।
7.भोजन का खराब होना भी, परिवर्तन है एक।
बोलो लगा दिमाग थोड़ा-सा, बच्चो तुम प्रत्येक।।
8.भौतिक गुण चीज़ों के बदले, परिवर्तन वह कौन।
थोड़ी बुद्धि लगाकर सोचो, रहो न ऐसे मौन।।
9.जिसके कारण वस्तु न पहली, कभी अवस्था पाती।
बोलो वह परिवर्तन क्या है, उत्सुकता घहराती।।

उत्तर :- 1.हाइड्रोजन गैस 2.कार्बन 3.मंद 4.तीव्र 5.वांछनीय 6.आवर्ती 7.अनावर्ती 8.भौतिक 9.रासायनिक।

- डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

मेरा स्कूल

चारों और खिले हैं फूल
सबसे सुंदर मेरा स्कूल

इक कमरे में खिड़की चार
सजी हुई है हर दीवार

शिक्षक करते हमको प्यार
पावन विद्या का संसार

पढ़ते-पढ़ते खेलें खेल
मिलकर एक बनाए रेल

हा-हा, ही-ही करें धमाल
चुटकी में हल करें सवाल

घण्टी बजती करते शोर
दौड़े जाते घर की ओर

सुनीता काम्बोज
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
लौंगोवाल, जिला - संगरूर, पंजाब -148106

बूझो पहेली

1. डंडे जैसा उसका रूप, मीठेपन से है भरपूर
2. मीठी गूदा खूब सफेद, भूरी गुठली खोजो भेद
3. छुहारे का है भूतकाल, ऊर्जा देता बेमिसाल
4. गुच्छे में मीठे रसगुल्ले, काले,पीले, हरे मुटल्ले
5. बच्चे बड़े चाव से खाते, काले, छोटे, गुठली वाले
6. भूरा छिलका भूरा गूदा, गोल फल, काला बीजा
7. लोहे का अच्छा भंडार, सेहत का है पक्का यार
8. जल को घेरे गोरा गूदा, छिलका रेशा सख्त भूरा
9. खाल हरी है, माल लाल, बड़ा पनीला इसका ताल
10. सफेद गूदा पाया जाता, कभी लाल गूदा चौंकाता
11. पीला गूदा काले बीज, उदर रोग में बहुत मुफीद
12. कई कोठरी उसके अन्दर, जिसमें मोती लाल सुन्दर
13. नहीं निकलते गुठली बीज, मीठा हलुआ बड़ा लजीज
14. रस की खुशबू है खटमिट्ठी, फाँक-फाँक में विटामिन-सी
15. शंकु सरीखा है आकार, करे प्यास का फौरन 'नाश'
16. शंकर जी से नाता इसका, पीला उसका गूदा छिलका
17. पतला छिलका गाढ़ा लाल, सब्जी जैसा फल का नाम
18. पीला गूदा पीला छिलका, गुठली में से भी कुछ निकला
19. बहुत नुकीली गुठली इसकी, वर्षाऋतु में झलकी दिखती
20. पीला फल ये सबको भाता, कहते इसको फलों का राजा

प्रिय पाठको, 'शिक्षा सारथी' के हर अंक में हम ऐसी ही कोई पहेली प्रकाशित किया करेंगे। इनके उत्तर जानने के लिए आपको अगले अंक का इंतजार करना पड़ेगा ... और हाँ, आगामी अंकों के लिए ऐसी ही मनोरंजक और ज्ञानवर्धक पहेलियाँ बनाकर आप भी हमें भेज सकते हैं। (इस अंक की पहेलियाँ श्री प्रशांत अग्रवाल, प्राथमिक विद्यालय, डहिया, बरेली, उप्र द्वारा तैयार की गई हैं।)

गुरु जी की सीख

बहुत समय पहले की बात है एक विख्यात ऋषि गुरुकुल में बालकों को शिक्षा प्रदान किया करते थे। उनके गुरुकुल में बड़े-बड़े राजा महाराजाओं के पुत्रों से लेकर साधारण परिवार के लड़के भी पढ़ा करते थे।

वर्षों से शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और सभी बड़े उत्साह के साथ अपने-अपने घरों को लौटने की तैयारी कर रहे थे कि तभी ऋषिवर की तेज आवाज सभी के कानों में पड़ी, आप सभी मैदान में एकत्रित हो जाएँ।

आदेश सुनते ही शिष्यो ने ऐसा ही किया।

ऋषिवर बोले- प्रिय शिष्यो, आज इस गुरुकुल में आपका अंतिम दिन है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ से प्रस्थान करने से पहले आप सभी एक दौड़ में हिस्सा लें।

यह एक बाधा दौड़ होगी और इसमें आपको कहीं कूदना तो कहीं पानी में दौड़ना होगा और इसके आखिरी हिस्से में आपको एक अँधेरी सुरंग से भी गुजरना पड़ेगा। तो क्या आप सब तैयार हैं?

हाँ, हम तैयार हैं, शिष्य एक स्वर में बोले।

दौड़ शुरू हुई। सभी तेजी से भागने लगे। वे तमाम बाधाओं को पार करते हुए अंत में सुरंग के पास पहुँचे। वहाँ बहुत अँधेरा था और उसमे जगह जगह नुकीले पत्थर भी पड़े थे जिनके चुभने पर असहनीय पीड़ा का अनुभव होता था।

सभी असमंजस में पड़ गए, जहाँ अभी तक दौड़ में सभी एक सामान बर्ताव कर रहे थे वहाँ अब सभी अलग-अलग व्यवहार करने लगे। खैर, सभी ने जैसे-तैसे दौड़ ख़त्म की और ऋषिवर के समक्ष एकत्रित हुए।

पुत्रो! मैं देख रहा हूँ कि कुछ लोगों ने दौड़ बहुत जल्दी पूरी कर ली और कुछ ने बहुत अधिक समय लिया, भला ऐसा क्यों?, ऋषिवर ने प्रश्न किया।

यह सुनकर एक शिष्य बोला, गुरु जी, हम सभी लगभग साथ साथ ही दौड़ रहे थे, पर सुरंग में पहुँचते ही स्थिति बदल गयी। कोई दूसरे को धक्का देकर आगे निकलने में लगा हुआ था तो कोई सँभल-सँभल कर आगे बढ़ रहा था और कुछ तो ऐसे भी थे जो पैरों में चुभ रहे पत्थरों को उठा -उठा कर अपनी जेब में रख ले रहे थे ताकि बाद में आने वाले लोगों को पीड़ा न सहनी पड़े, इसलिए सब ने अलग-अलग समय में दौड़ पूरी की।

ठीक है! जिन लोगों ने पत्थर उठाए हैं, वे आगे आएँ और मुझे वो पत्थर दिखाएँ। - ऋषिवर ने आदेश दिया।

आदेश सुनते ही कुछ शिष्य सामने आए और पत्थर निकालने लगे। पर ये क्या जिन्हें वे पत्थर समझ रहे थे दरअसल वे बहुमूल्य हीरे थे। सभी आश्चर्य में पड़ गए और ऋषिवर की तरफ देखने लगे।

मैं जानता हूँ आप लोग इन हीरों के देखकर आश्चर्य में पड़ गए हैं। ऋषिवर बोले दरअसल इन्हे मैंने ही उस सुरंग में डाला था, और यह दूसरों के विषय में सोचने वालों शिष्यों को मेरा इनाम है।

पुत्रो! यह दौड़ जीवन की भागम-भाग को दर्शाती है, जहाँ हर कोई कुछ न कुछ पाने के लिए भाग रहा है। पर अंत में वही सबसे समृद्ध होता है जो इस भागम-भाग में भी दूसरों के बारे में सोचने और उनका भला करने से नहीं चूकता है। अतः यहाँ से जाते-जाते इस बात को गाँठ बाँध लीजिये कि आप अपने जीवन में सफलता की जो इमारत खड़ी करें उसमे परोपकार की ईंटें लगाना कभी ना भूलें, अंततः वही आपकी सबसे अनमोल जमा-पूँजी होगी।

2019

मई-जून माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 मई -	अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस
3 मई -	विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस
7 मई -	भगवान परशुराम जयंती
8 मई-	विश्व रेडक्रॉस दिवस,
11 मई-	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
12 मई-	अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस
15 मई-	अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस
18 मई -	बुद्ध पूर्णिमा
21 मई -	आतंकवाद विरोधी दिवस
23 मई-	विश्व कछुआ दिवस
31 मई-	विश्व तंबाकू निषेध दिवस
5 जून-	ईद-उल-फितर
6 जून -	महाराणा प्रताप जयंती
7 जून -	गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस
12 जून-	बाल श्रम विरोधी दिवस
16 जून-	पितृ दिवस
17 जून -	संत गुरु कबीर जयंती
20 जून-	विश्व शरणार्थी दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।

मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

It runs in the family :

Parents' education and child learning outcomes

Naveen Sunder

Early life learning is known to influence later life outcomes like schooling, employment, and income. It is thus vital to identify strategies to enhance child learning in schools. This article examines the effects of parental education on child learning outcomes by leveraging the variation in access to schooling for parents arising out of the implementation of a national school construction policy in India.

Developing countries around the world have largely succeeded in raising school enrolment rates. However, these improvements have not always led to commensurate improvements in learning outcomes (Glewwe and Muralidharan 2016). India has had near-universal primary school enrolment rates since 2009, but learning levels remain abysmally low – Annual Survey of Education Report (ASER) data for 2016 show that only 43% (28%) of third graders could read a vernacular text (solve a two-digit subtraction problem). This is also reflected in the fact that India is ranked 115th on the Human Capital Index (released by the World Bank).

A large body of evidence explores the consequences of early life learning on later life outcomes such as schooling, employment, and income (for example, see Glewwe 1996, Chetty et al. 2011 and Kaila et al. 2018). It is thus vital to identify strategies that can be used to enhance child learning in schools.In recent research, I examine one important input for child learning – parents' education (Sunder 2018). I study the effects of parental education on child learning outcomes by leveraging the exogenous (external) variation in access to schooling for parents arising out of the implementation of a national school construction policy in India.

India's District Primary Education Programme (DPEP)

The DPEP was a school construction programme rolled out by the

Government of India, in collaboration with partners, between 1993 and 2004 across 271 districts in 18 states. The programme built over 100,000 primary and upper-primary schools and benefitted more than 50 million children.

DPEP was targeted towards districts with female literacy levels below the national average at the time of programme initiation (39.2%). This assignment rule led to a jump (discontinuity) in the probability of receiving the programme around the threshold of 39.2% district female literacy – the likelihood of programme exposure for districts just below the cut-off being significantly higher than that of districts just above the cut-off. This set-up lends itself to the use of a Regression Discontinuity (RD) framework1. Using this empirical strategy, I find that during the time that DPEP was in place, a typical DPEP district received 258 more government schools than a comparable non-DPEP district, which translated to a relative increase of 0.21 government schools per 1,000 population in the DPEP districts.

Timing of implementation

DPEP was not initiated at the same time across the country (Azam and Saing 2017). Thus, ascertaining the exact date when a district received DPEP is critical to identify the people who would have benefitted from this scheme. I gather and use national-, state-, and district-level reports on programme implementation from government archives to understand the exact start date of DPEP for each of the 271 DPEP districts. I treat the date that a district first received DPEP funds to mark the beginning of the programme in the district.

Impact on direct beneficiaries

Since the majority of the schools constructed under DPEP were primary and upper-primary schools, the people who benefitted directly (the direct beneficiaries) were those who were of primary school age (5 to 14 years) at the time. I estimate the direct effects of the programme by comparing people of this age group living in districts within a bandwidth of districts on either side of the RD cutoff2. Using national household survey data from multiple rounds of the District Level Household and Facility Survey (DLHS), I find that the enhanced availability of schools due to DPEP led to increased enrolment (8 percentage points (p.p.)), educational attainment (0.8 years), primary school completion (7 p.p.) and literacy (8 p.p.) among direct beneficiaries (similar to Khanna 2018) . Both male and female beneficiaries benefitted similarly from DPEP.

Intergenerational effects

In order to identify the intergenerational (or indirect) effects of DPEP, I compare the outcomes of children whose parents were of school-going age (5-14 years) during the DPEP years and resided in districts on either side of the RD threshold. To isolate the indirect effects stemming solely from the programme (in other words, those that were channeled through parental educational attainment), I focus on children who started school after DPEP ended in 2004.

Using child test score data for all years between 2007 and 2014 (from the ASER), I find that on average,

children of female DPEP beneficiaries perform better on standardised tests on reading (0.19 standard deviation (SD))3, math (0.18 S.D.), and English (0.09 S.D.) than comparable children of non-beneficiaries. However, the performance of an average child of a male DPEP beneficiary is not statistically significantly different from that of an average child whose father was in a non-DPEP district. While my results indicate that mothers are clearly able to transmit their human capital to the next generation, I am unable to reject the hypothesis of equality between the effects on the mother and father beneficiary samples.

Potential mechanisms

1. Using school-level information from a government dataset (District Information System for Education), I find that the identified effects are not driven by the potentially 'superior' quality of schools in DPEP districts, but rather due to their increased numbers.
2. I use information from other household surveys (Indian Human Development Survey and DLHS) to investigate several potential household- and individual-level mechanisms. Results suggested that my findings could have been driven by:

- Higher bargaining power for women
- Increased educational investments in children
- Improved childcare practices
- Better health of mothers

Contributions

1. While most previous analyses on school construction policies have focused on identifying effects on direct beneficiaries (Duflo 2001, Azam and Saing 2017, and Khanna 2018, among others), the current study is one of the first to explore intergenerational consequences.
2. By examining performance on standardised tests, I am able to identify programme impacts on actual learning outcomes. This is uncommon in the school construction literature (Burde and Linden 2013).
3. I add to the evidence on the important role of parents, especially mothers, in shaping child learning.
4. Given that overall education measures in many countries in Central/Western Africa and South Asia are comparable to those that prevailed in India at the time of DPEP implementation, the results of this analysis point to long-term learning improvements that can be attained through school construction policies.

Policy implications

The findings from this analysis show that school infrastructure programmes have substantial intergenerational impacts, consequences that should be taken into consideration in the cost-benefit analyses that are conducted to guide policy discussions.

Additionally, my research demonstrates that parents, particularly mothers, play an important role in shaping their children's learning abilities. This is in line with the findings of other studies (such as Andrabi et al. 2012, and Banerji et al. 2017) that show how improving the skill set of mothers could go a long way in boosting child performance on tests. The growing evidence base on maternal contribution to child learning highlights the need for policies that target parents as a means to improve educational outcomes for children (Glewwe and Muralidharan 2016). These reforms should complement, and not substitute, the school-based efforts explored in the education literature (reviewed in Muralidharan 2013).

Notes:

1. Regression discontinuity design is a technique used to estimate the effect of an intervention when the potential beneficiaries can be ordered along a cut-off point. The beneficiaries just above the cut-off point are very similar to those just below the cut off. The outcomes are then compared for units just above and below the cut off to estimate the causal effect of the intervention.
2. These bandwidths are estimated with data-driven procedures discussed in Calonico et al. (2014)and Calonico et al. (2018).
3. Standard deviation is a measure that is used to quantify the amount of variation or dispersion of a set of values from the mean value (average) of that set.

https://www.ideasforindia.in//topics/human-development/it-runs-in-the-family-parents-education-and-child-learning-outcomes.html
"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"
Cornell University
fn63@cornell.edu

Aspirations
On a High Note

Smt. RUPAM JHA

This is a word which is actually very important to students. Aspirations should always be high. It will go a long way in enabling students to achieve their goals. They say it all starts with a dream.

If you aim for the sky, you get the mountain top.

Aspirations must always be high, so that you work harder to achieve it. When aspiration levels are high, motivation too is at play.

Here imagination is also active as it can play a great role in motivating students. A child having a vivid imagination can not only be classified as being creative but can also play in his or her mind a better life ahead.

It is said that when aspiration levels are high and locus of control is high, then the right environment is created for the student to perform well in structured exams as well as achieve higher levels of learning.

Ofcourse, daydreaming is not enough. It has to be followed up with diligence. A goal has to be worked towards. We have often heard that hard work is the key to success and it is.

All those with high achievement levels have always held high aspiration levels. Success rate is also linked to achievement levels. The higher the achievement level, the higher will be the success rate. Of course it is the duty of teachers and parents to constantly support the child.Many a times, it is the teacher who notices a spark in the child and encourages the child to aim

high. Parents also can act as aspiration boosters. This feature has been very well highlighted in the Indian feature film, Nil Batte Sannata where the mother encourages her distracted daughter to have a high level of aspiration, higher than their own socio- economic strata.

The real tragedy of the poor is the poverty of their aspirations.

Adam Smith

The above quote by the famous economist actually tells you the importance of high aspirational levels. Yearnings when accompanied by real efforts leads to achievement. A motivated mindset also helps in this direction. Aspirations provide a direction to students, you can say a vision and it is this vision which drives them towards their goals. Education is the means to provide a way to students to reach their desired goals. Using academic aspirations to achieve outcomes and goals in life is motivational for students. In the process of learning, targets become important and for this aspirational levels must always be high.

Students are frequently asked the question as to what they would like to be when they grow up. Therein lie their aspirations. Slowly they can climb the stairs, one step at a time to reach their goals. Strong aspirations make for strong efforts and the resultant product is a strong willed student.

Aspirations can be shared amongst individuals. Shared aspirations can be among all peers to do well in the board examination. Individual aspirations can be of each student following their goals. Both are important as one encourages the other.

It is said that a strong willed person is normally determined to get ahead in life and has strong aspiration levels. Self efficacy comes from within and so does the motivation to excel in the chosen field. Aspiration may not always be to get ahead in the field of academics. Just as intelligence can be in varied fields, so also the desire to get ahead can be in different avenues.

They say it is the goals that make all the difference. So that makes aspiration a very powerful tool in taking a student closer to their goals. With high aspirations and clear goals students will be giving their best shots in their stint at the learning process.

Aspirations include within its folds the level of education which a student wishes to achieve.

Within our dreams and aspirations we find our opportunities.

Sugar Ray Leonard

With clear goals students reach a level where they are able to take the onus of their learning process in order to reach up to the levels of their aspirations. This level comes when students rise above the level of rewards and punishments and seek to reach their desired aspirational levels.

When students keep changing their mind about their goals, it is an indication that their aspirations are not clear. A very good research proposal and ready reference for school counselors would be a track record of aspirations of students and where it has taken them.

So all those students who are reading this article or not reading it, Just Aim High! And see where it takes you.

I understand that people have aspirations, and everyone wants to play the lead role. But, I do believe that one must climb the ladder from the first step.

Karan Patel

Subject Expert
SCERT Haryana,
Gurugram

Special Children Need Special Attention

(Awareness regarding CWSN students)

Mrs. Suman

The society at large is often unaware of the potential of children with special needs. In the popular mind, special needs are usually identified with very low expectations. Parents should believe in the value of educating children with special needs. The higher is the expectations, the higher will be their acceptance in the family.

THE RIGHTS OF PERSONS WITH DISABILITIES ACT, 2016

According to the chapter No. one of this act the following provisions made by GOI.

(1) Person with benchmark disability "means a person with not less than forty percent of a specified disability where specified disability has not been defined in measurable terms and includes a person with disability where specified disability has not been defined in measurable terms, as certifying authority.

(2) Person with disability "means a

person with long-term physical, mental, intellectual, or sensory impairment which, in interaction with barriers, hinders his full and effective participation in society equally with others.

Chapter-2

(1) The Government shall ensure that the persons with disabilities enjoy the right to equality, life with dignity and respect for his or her integrity equally with others.

2) The Government shall take measures to protect persons with disabilities from being subjected to torture, cruel, inhuman or degrading treatment

Chapter-3

Duties of Educational Institutes mentioned in the rights of persons with disability Act 2016

The Government and the local authorities shall Endeavour that all educational institutions founded or recognized by them provide inclusive education to the children with disabilities

(1) Admit them without discrimination and provide education and opportunities for sports and recreation activities equally with others.

(2) Make building, campus and various facilities accessible.

(3) Provide reasonable accommodation according to the individual's requirements

(4) Provide necessary support individualized or otherwise in environment that maximize academic and social development consistent with the goal of full inclusion

(5) Ensure that the education to person who are blind or deaf or both is imparted in the most appropriate languages and modes and means of communication

(6) Provide transportation facilities to the children with disabilities and also the attendant of the children with disabilities having high support needs.

Chapter-6

Special Provisions for Persons with Benchmark Disabilities

1) Notwithstanding anything contained in the Rights of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009, every child with benchmark disability between the age of six to eighteen years shall have the right to free education in a neighborhood school, or in a special school, of his choice.

(2) The Government and local authorities shall ensure that every child with benchmark disability has access to free education in an appropriate environment till he attains the age of eighteen years.

(3) All Government institutions of higher education and other higher education institutions receiving aid from the Government shall reserve not less than five percent seats for persons with benchmark disabilities.

CBSE and BSEH (Board of school Education Haryana) being sensitive to the needs of disabled students in extending several exemptions /concessions to candidates with disabilities as defined in The Rights of persons with Disabilities Act - 2016.

Neither the school nor the parents fully aware about these exemptions and are also not following correct way of seeking available exemptions during their course of studies and examinations.

General Exemptions / Conces-

sions for CWSN Students :-

- Issuing Authority of Medical Certificate (CMO / Civil Surgeon / Medical Superintendent)
- Facility of Scribe/writer/adult promoter is permissible
- Exemption from third language
- Flexibility in choosing subjects
- Alternate questions/Separate question/large font question papers

Adversary to schools as per the Guidelines of the Inclusive Education of Children with Disabilities (IECD):

- Ensure that no child with special needs is denied admission in Mainstream Education
- Monitor enrolment of disabled children in schools
- Schools to provide support through assistive devices and the availability of trained teachers

Modify the existing physical infrastructure and teaching methodologies to meet the needs of all children including Children with Special Needs.

- Ensure that the school premises are made disabled friendly by 2020 and all educational institutions including hotels, libraries, laboratories and buildings have barrier free access for the disabled .
- Ensure availability of Study Material for the disabled and Talking Text Books, Reading Machines and Computers with speech software .
- Ensure adequate number of sign language interpreters, transcription services and a loop induction system for the students with speech Language Disability
- Revisit classroom organization required for the education of Children with Special Needs .
- Ensure regular in-service training of teachers in Inclusive Education at the elementary and secondary level.

Facilities/Concessions Given By The Central And State Government For The Disabled Under Programmes :-

1. **Postage -** Payment of postage, both inland and foreign, for 'Blind Literature ' pockets if sent by surface mail. If packets are to be sent by air, then prescribed airmail charges are applicable.
2. **Telecommunication -** Confessional Telephone Connection to Blinds:

Rental Rebate - 50% of the normal rental

Advance Rental - 50% of the annual advance rental and bi- monthly rental as applicable to a private subscriber. This facility is available in Non-OYT (Special) category only.

3. **Travel Concession for the Disabled :-**

A) Free travel facilities for disabled in State transport vehicles with one attendant

(B) By Rail

Blind person, Person with Orthopaedic Disabilities, Deaf & Dumb Person, Person with Mental Retardation can get the concession(half) in Rail Tickets.

(C). By Air

The Indian Airlines Corporation allows 50% concesional fare to blind persons, 80% concession to the persons with locomotor disability.

(4). Employment of the Handicapped

Assistance to the disabled persons in getting gainful employment is available either through the special cells in normal employment exchanges or through special employment exchanges for physically handicapped.

I believe that school administration can play an important role in schools, especially with subjects like this one. They are very much needed to take the lead and partner with teachers and the society to help assure that all children get a good quality education, including those with differently abled or any other challenges. All children are entitled to get good quality education, despite their handicaps, gifts or challenges. It depends on us as well as school administration to promote a climate of acceptance, warmth, and empathy. This article is only for the awareness of parents of disabled students as well as School Administration regarding concessions/facilities given by central and state Government for uplifting of CWSN students as we all have to fight with evils of the society for their rights. At last I request to the Government for proper monitoring and School Administration for providing above mentioned concessions/ facilities for CWSN students because I personally observed that the school Administration are also not aware about the concessions/ facilities provided by GOI for the special children. Jai Hind

Lecturer Economics
GHS Bohar Rohtak (Haryana)

Research @ REAP Cell, SCERT

The SCERT Haryana is a premier institute of the Department of School Education, Govt. of Haryana, enshrined with a responsibility to cater to the academic needs of teachers and nurture educational values among the taught. Its areas of operation include research in school education, training of teachers, development of innovative pedagogy, designing curricula, population education, handling of large scale assessment of students on regular basis to track their performance, popularising Science and Maths, contribution to new knowledge and providing input to policy makers at the state and national level.

Research is a voyage of discovery. It improves knowledge, practices and helps in finding solutions to the problems. Research at SCERT Haryana aims to improve the educational level of students, analyse the policy implementation and provide timely feedback to the policymakers. Specific projects in educational research are undertaken every year. The Centre for Research and Experiments for Action and Policy (REAP) is an exquisite cell instituted with in SCERT in July 2011, that has facilitated the Education Department by presenting scientific and evidence based research reports to bring about optimistic transformation in the education system of the state.

The REAP Cell coordinates and provides training to the DIET faculty in conducting Action research studies. The DIETs further help the school teachers in conducting action research in order to improve their pedagogical practices.

b) Session 2018-19 :

i) To Study the Effectiveness of Learning Enhancement Programme:

The Haryana Government launched the Learning Enhancement Programme in 280 selected schools in the state in November 2014. It was further scaled up to all primary schools across the state from the session 2016-17. The objective of the programme is to bridge the learning gaps and to bring every primary school student to grade level. It focuses on activity-based learning to develop desired competencies among students. A research study was conducted in the session 2018-19

a) Research Projects 2011- 2018		
S. No.	**Topic of Research**	**Year**
1	Analysis of the Mid Day Meal in Haryana	2012
2	Analysis of Monthly Stipend Scheme in Haryana	2012
3	Baseline Report on Learning Outcome Survey	2013
4	SSA Haryana Annual Reports (2001-08)	2013
5	DISE 5% Sample Checking in Ambala and Gurgaon	2013
6	Analysis of Teacher's Time Utilization in Haryana	2013
7	Evaluation of G-10 Project in Gurgaon, Haryana	2013
8	Analysis of D.Ed Internship Program in Haryana	2013
9	5% Sample Checking of DISE Data 2013-14	2014
10	What do Children Know in Mathematics and Language A Report of Haryana's State Level Achievement Survey in Classes 3 and 5	2014
11	The Nett Teacher Training Pilot in Five Districts of Haryana State	2015
12	5% DISE Data 2014-15	2015
13	A Study on Children With Special Needs	2016
14	Problems Related to Out of School Children- with special reference to Children Belonging to SC Community	2016
15	5% DISE Data 2015-16	2016
16	Sanitation and Hygiene in Primary and Upper Primary Schools	2017
17	Hurdles in Education of Girl Child in Government Co- Educational Schools	2017
18	To Study the Impact of Innovative Programme of Joyful Activities in Government Schools of Haryana	2017
19	A Study on Drop in Enrolment in Government Elementary Schools of Haryana in the session 2014-15 and 2015-16	2018

to assess the effectiveness of the programme. The study was conducted in 118 Government primary schools in 10 sampled districts of the state. The study was conducted to analyse various aspects of the programme viz. Planning and coordination, Implementation at the state level and the mentoring and monitoring system. The information was collected from various stakeholders of the programme at state, district, block and school level through separate questionnaires for Programme Coordinator at state level, DIET IFIC In charge, Block Elementary Education Officers, Block Resource Persons, School LEP Owner, school teachers and students to assess their understanding of the programme, implementation status and problems faced by them. The study provides valueable inputs for effective implementation of the programme.

ii) To Study the Existence and Functioning of Library in Government Schools of Haryana

The library in a school is a considered the research and information arm for its concerned users as it provides information to students related to various topics and provides professional development to teachers. A fully functional school library with updated, latest study material and under the supervision of a designated and qualified librarian can boost student's achievement and cultivate a collaborative spirit within schools. Libraries in schools are regarded as an essential instrument for putting progressive methods into practice. But it is most unfortunate that in a large number of government schools there are at present no libraries worth the same. So, a need was felt to study the existing conditions of school libraries in government schools of Haryana so that an actual picture of existence and functioning of libraries can be derived from the current field situations.

For the purpose of the study, a total of 137 schools including 38 of High & Middle level (each) and 61 of Senior Secondary level were surveyed among the 11 sample districts. Information related to various aspects of library in terms of availability and functioning, was collected from School Heads/ Principals, Library in-charges, Class teachers and the students it selves. This study is expected to provide valuable inputs to make libraries in government schools of Haryana more efficient and more contributing towards the knowledge pool of its ultimate users which are students and teachers.

c) Session 2019-20- Ongoing Project:

The widespread use of internet has changed the life of people significantly. Internet has transformed the ways of social interaction, entertainment and learning methods. Various researches have revealed that the use of mobile phone and internet is affecting the physical and mental health of children. The Population Cell, SCERT Haryana is conducting a research project on- Effect of Mobile phone and Internet on Physical and Mental Health of Adolescents. The study will be conducted in selected senior secondary schools of 11 sample districts in the state. A pilot study for finalisation of the research tool has been conducted in May, 2019.

Dr. Shiwani Kaushik
Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Summer Activities for Children

Dr. Deviyani Singh

Summer is here and so are the vacations, welcomed by children dreaded by parents sometimes. Parents can't even ask their kids to go out to play because of the fear of heat stroke and the warm dusty winds "loo" blowing outside which would make them sick. So we are constantly racking our brains for new ideas to keep kids gainfully occupied even though they are forced to stay indoors. It's not totally a lost cause though the early mornings and late evenings can still be utilised to play outdoor games. The problem is how to keep them from being glued to the TV or PC when they are indoors. The solution is time management. Children should be taught to divide their time to develop their mind, body and intellect. The morning when their mind is fresh and rested should be reserved for doing their holiday homework. Children tend to postpone doing this till the last days of the vacation. This tendency should be avoided and they should be encouraged to make a habit of finishing their work before or on time at least. After that kids can be made to do some general reading. They must read a newspaper daily. Get your child to read the headlines to you daily and you can explain the issues there. They can also start reading some editorial pages and solving the crossword puzzles there. If you must watch TV get them to watch the news channel along with you till they slowly develop an interest of their own. Get them to relate these things they read to the happenings in real life. You may be surprised to know how much knowledge your child has or is actually interested in politics. After lunch or if kids are feeling a little lazy or restless they can be allowed to watch a little TV. There are many educative channels available on TV like Discovery, National Geographic and travel channels where kids can increase their general knowledge. They should also be given early exposure to good reading material, books and magazines to develop an all around general awareness. They could be asked to write short stories, poems or essays on fun topics are jokes even to develop their imagination. Old magazine could be used for making collages to decorate their rooms. There are many indoor games also that increase mind and word power like Chess and Scrabble. You can

play chess with your kids or they can play alone against the computer even.

Since kids are so addicted and fond of electronic media these days and going further away from nature but fret not, there is a way to combine the two. Even small kids these days can operate smart phones and would love an opportunity to use yours. Give them nature assignments. Ask your little one to take your phone and click five pictures of something to do with nature for example flowers, insects, trees, leaves, stones, types of soil etc. They could then show you the photographs and use the net to identify the names of flowers etc. They could be asked to make videos also of some nature activity-birds feeding on grain, butterflies and bees sipping nectar from flowers, a spider weaving a web, ants carrying food, squirrels climbing trees etc. In this way they will learn a new hobby- photography which requires patience, concentration and imagination and you may be surprised with the delightful pictures and videos they come up with! Ask them also to keep water and grain bowls and feed the birds. They could also plant a tree or shrub and be asked to care for it daily. You could also ask them to join you in a little spring-summer cleaning in and around the house. This will teach them to be responsible and keep their work and living place neat and clean.

In summer months it's a good idea to get your kids enrolled in some swimming pool. This is not only an all-round exercise but also effectively cools down the body making kids calm and tired so they get a good night's sleep. If you do not have a pool nearby even in the house you can make a little splash pool for kids to sit in. There are plastic kiddie pools available which are quite affordable. In the villages kids use the ponds and canals for swimming which are often not hygienic and dangerous even. So it would be good to explore better options. If you have an airgun or even a good sling shot at home you can make a small shooting range at home. You don't have to wait only for Holi you can fill small balloons with water

or air and make kids shoot them down. Marksmanship makes kids improve their concentration and posture. Games can be played in your backyard even - If you can install a trampoline, hammock or even a simple swing from a tree kids would love to play on them. Or make a tree house which the kids would love to spend time in. If you hang a rope on a tree kids love to climb it and it is an excellent all round exercise. Get kids to learn to cook, even boys should be taught the basics of cooking. Or at least to use the microwave, heat food, serve it and arrange the table etc. There are many indoor games available and if not you can use the old ones from your childhood - seven stones or pithu, marbles, musical chairs, blind man's bluff, hide and seek. You can even organise a small treasure hunt everyday with clues which make them think and investigate around the house itself. Why wait for a birthday or occasion only? Let your kids invite their friends for a stay over pyjama party where they can enjoy and tell stories to one another. Kids enjoy ghost stories too. Kids should be encouraged to take up some hobby classes even like painting, dancing, learning a musical instrument, singing, flower arrangement etc. You could take them on a small trek or even cycling and picnics on weekends. If you have a pet they should be made to participate in taking care, grooming and feeding it. This makes kids develop compassion and caring for all creatures and makes them responsible. You can also take kids to the mall with you and teach them about shopping and accounting from clothes to vegetables. Kids enjoy cycling, skating, football and cricket etc. but if there's not enough space or they have to go far outside to find a park to play in you can even organise indoor golf putting or croquet in your backyard which even adults can join in. Let them go out on the roof or terrace on a summer night and look at the stars and try to name and remember all the constellations. You don't need to go to some faraway place it will be fun if kids can camp or sleep under the stars for a night using a mosquito net and cooler installed outside in your backyard, terrace or roof top even. These are some examples to make summer fun, I'm ruse you can add more innovative ideas and enjoy the warm season with your children.

Editor Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

NATIONAL TALENT SEARCH EXAMINATION (NTSE-2016) STAGE -1 GUJARAT STATE : LCT

1. Mansi wanted _____ a doctor when she was in Primary School.

(1) became (2) to become (3) becomes (4) had become

Ans. **(2)**

Sol. Here the verb want is followed by infinitive

2. Jaydeep helps his friends but he _______ not by them.

(1) is + help (2) does + help (3) is + helped (4) does + helped

Ans. **(3)**

Sol. Usage of pasive form of simple present tense

3. The next year, the Government of Gujarat ______ business summit at Mahatma Mandir, Gandhinagar.

(1) organize (2) organized (3) will organize (4) is organized

Ans. **(3)**

Sol. It is showing a plan to be executed in future through modal verb

4. Before we reached the cinema hall, the film 'Bajarangi Bhaijan' _______.

(1) to start (2) started (3) had started (4) was started

Ans. **(3)**

Sol. When we want to talk about an action that happened before a pastevent, we often use the past perfect.

5. I saw a beggar near the temple. He work ______ clothes, though it was winter.

(1) tears (2) tearing (3) torn (4) to tear

Ans. **(3)**

Sol. THE WORD TORN DESCRIBES THE NOUN CLOTHES

6. Meet and I study in the same school but Meet is cleverer than ______.

(1) I (2) my (3) me (4) mine

Ans. **(1, 3)**

Sol. Pronoun antecedent agreement rule.

7. Give the piural from of word 'mouse'.

(1) mouses (2) mousies (3) mices (4) mice

Ans. **(4)**

Sol. Plural form of mouse is mice, irregular form of noun.

8. Dr. A. P. J. Abdul Kalam was a great scientist, ______?

(1) was he (2) is he (3) wasn't he (4) won't he

Ans. **(3)**

Sol. If the question is in positive form the question tag is in negative form

9. Amit has not a big mobile, _______ ?

(1) has he (2) have he (3) have not he (4) isn't

Ans. **(1)**

Sol. If the question is in negative form the question tag is in positive form

10. Come on India _____ We want a six.

(1) ! (2) , (3) . (4) ?

Ans. ***(1)***

Sol. The phrase is showing a strong excitement or cheers, thus !mark is used to express the emotion

11. Choose the correct inversion question of the following sentence.

Kiran played cricket yesterday.

(1) Is Kiran played cricket yesterday ? (2) Was Kiran played cricket yesterday ?

(3) Dose Kiran played cricket yesterday ? (4) Did Kiran played cricket yesterday ?

Ans. ***(NA)***

Sol. The options are all wrong

12. India is one of _____ oldest civilization in the world.

(1) a (2) an (3) the (4) at

Ans. ***(3)***

Sol. The determiner "The" shows superlative degree "Oldest"

13. I will stay _____ you return.

(1) either (2) until (3) or (4) after

Ans. ***(2)***

Sol. The conjunction "until" shows a parallel action or time.

Read the passage and give the answer given below it. (14 to 17)

Once there was mouse. The mouse always looked worried because it was afraid ol cats. A magician had pity on it and turned it into cat. Now the cat was afraid of dog. So the magician turned the cat into a dog. The dog began to fear tigers. Now the magician turned the dog into a tiger. The tiger began to fear hunters. Once day the magician said, 'Be the mouse, again, you are no better than mouse at heart.'

14. What was mouse afraid of?

(1) dog (2) cat (3) car (4) bus

Ans. ***(2)***

Sol. According to reference to context with the given passage

15. What did the magician turn the cat into ?

(1) rat (2) dog (3) tiger (4) ant

Ans. ***(2)***

Sol. According to reference to context with the given passage

16. What did magician do with the dog ?

(1) turned cat (2) mouse (3) tiger (4) hunter

Ans. ***(3)***

Sol. According to reference to context with the given passage

17. Tiger was turned into ?

(1) cat (2) dog (3) hunter (4) mouse

Ans. ***(4)***

Sol. According to reference to context with the given passage

18. Pick odd one out.

(1) cat (2) mouse (3) rat (4) hunter

Ans. ***(4)***

Sol. According to reference to context with the given passage

http://ntsehelpline.com/wp-content/uploads/2015/07/NTSE-Sample-Paper-with-Solution-1.pdf

Mother's love

Drip by drip,
Her empty heart aches.
As she walks along the empty road,
Years long. Along with hardened feet.
A thorn pinches deep inside,
Inside the empty heart. And nebulous soul
Somewhere in distance
A bell tolls.
A star shoots down the fluid space.
Crosses the world to disappear beyond,
Somewhere deep inside.

She looks for a forlorn fruit,
A sweet red berry. A sour green rosella,
Swift wind blew. Making no
muzzle
And she gazed up
With seven plus colors in
her distant eyes,
The sky turned prophetic
With a half-cut moon smil-
ing with,
A half-cut face.
Hanging between the
Azure sky and green conifers
Chirpy birds flying back to
their earthly nests.
Roses swinging from earth
to heaven.
Ethereal music in the ambience
Gold and silver chime.
Two ender feet just traded in the edges of
Her austere life.

Then you came
Smiling. Laughing
Kissing her cheeks with childish innocence,
Pulling her pallu with your strong fists,
Putting dreams in her eyes.
Joy in her soul,
You're the destiny she was searching.
You're the wealth she has earned.
You're the idol she would revere.
You filled the empty space in her heart. And life
With luster of love.

Rakesh Agrawal

General Science

1. "Optical Phenomenon" in the fringe pattern of CD is
2. Celsius and Fahrenheit show the same temperature at
3. Exchange particle in Quark-Quark Interaction
4. The working of a rockets based on the principle of:
5. The pollutants which move downward with percolating groundwater are called
6. Hasdo Valley in Chhattisgarh is famous for
7. Special Theory of Relativity was proposed in
8. Black hole is an object to be found
9. IRADIAN is
10. Fraction of volume of ice seen outside when immersed in water?
11. The disease " bronchitis " is associated with:
12. Which colour indicate Highest Temperature?
13. Persons sitting in an artificial satellite of the earth has :
14. Light Year is
15. Liquefied petroleum gas (LPG) is mainly a mixture of
16. The Ozone layer lies in the
17. Most of the light rays inside a tube -light is in the form of
18. Which is the alkalodid contained in cola drinks?
19. The device used for detecting even feeble current:
20. Anemometer is an instrument used for measuring?

Ans : 1. Interference, 2. 40 3.Gluon 4. Conservation of momentum 5. Leachates 6. Coal mines 7. 1905 8. in the space 9. 57.3 degree 10. 10.5% 11.Lungs 12. Dull red 13. Zero weight 14. the distance traveled by light in one year 15. propane and butane 16. Stratosphere 17. ultra -violet light 18. Caffeine 19. Galvanoscope 20. Wind speed

http://placement.freshersworld.com/general-science/33121920

Sonnet 18 : Shall I compare thee to a summer's day ?

Shall I compare thee to a summer's day?
Thou art more lovely and more temperate:
Rough winds do shake the darling buds of May,
And summer's lease hath all too short a date;
Sometime too hot the eye of heaven shines,
And often is his gold complexion dimm'd;
And every fair from fair sometime declines,
By chance or nature's changing course untrimm'd;
But thy eternal summer shall not fade,
Nor lose possession of that fair thou ow'st;
Nor shall death brag thou wander'st in his shade,
When in eternal lines to time thou grow'st:
So long as men can breathe or eyes can see,
So long lives this, and this gives life to thee.

BY WILLIAM SHAKESPEARE

https://www.poetryfoundation.org/poems/45087/sonnet-18-shall-i-compare-thee-to-a-summers-day

Amazing Facts

- **Smiling releases endorphins in the body, which makes people feel better.**
- Kit Kat chocolate bar was introduced to the market in 1935.
- The average human head weighs about eight pounds.
- Fear of clowns is called coulrophobia.
- The average person is about a quarter of an inch taller at night.
- Common pesticides such as roach, termite and flea insecticide can be found in the bodies of majority of Americans.
- Isaac Asimov is the only author to have a book in every Dewey-decimal category.
- There is no tipping in Iceland.
- The founder of JC Penny had the middle name of Cash.
- Eating parsley after eating an onion can help in getting rid of onion breath.
- Gorilla gorilla gorilla is the scientific name for the animal gorilla.
- In the U.S. the most common excuse made to get out of paying a ticket is to say they missed the sign.
- A house cat spends 70% of its time sleeping.
- The first hair dryer was a vacuum cleaner that was used for drying hair.
- Whale eyes are the size of a grapefruit.
- Painting a house yellow or having a yellow trim helps in selling a house faster.
- On August 21st, 1911, someone stole the Mona Lisa, the most famous painting in the world, from the Louvre Museum. It was recovered two years later.
- The Great Wall stretches for about 4,500 miles across North China.
- The iron disulfide (Pyrite) is considered "fool's gold" because it looks very similar to gold.
- Nutmeg is extremely poisonous if injected intraveinously.
- A dentist from Buffalo New York named Alfred P. Southwick invented the electric chair.
- ABBA got their name by taking the first letter from each of their names (Agnetha, Bjorn, Benny, Anni-frid.)
- The space between your eyebrows is called the Glabella.
- Grapes are grown around the world more than any other fruit.
- The best selling game in history for coin-operated machines is Pac-Man.
- The Olympic torch weighs about 3 pounds.
- The famous Christmas song "Jingle Bells" was written for a Thanksgiving program in 1857 by James Pierpont. At the time, the song was called "The One-Horse Open Sleigh."
- Initially golf balls were made out of wood. After that they were made out of leather which was stuffed with feathers.
- Russian I.M. Chisov survived a 21,980 plunge out of a plane with no parachute. He landed on the steep side of a snow-covered mountain with only a fractured pelvis and slight concussion.
- The oldest actor to win a Best Actor Oscar is Henry Fonda. He was 76 when he won it.

http://www.greatfacts.com/

Haryana GK Questions

1. Who was the first Chief Minister of Haryana?Ans: **Bhagwat Dayal Sharma**(B.D. Sharma)
2. Who was the first Governor of Haryana?Ans: **Dharma Vira**
3. Which personality from Haryana became the Miss World 2017 title holder?Ans: **Manushi Chhillar from Sonipat**
4. Who is the person from Haryana who served as Chief of Indian Army Staff from 2010-2012?Ans: **General V.K. Singh**
5. Who is the Haryanvi person served as Governor of Karnataka state from 2009 to 2014?Ans: **H.R. Bhardwaj**
6. Which Haryanvi freedom fighter took part in Great Revolt of 1857?Ans: **Ganga Singh Gurjar**
7. When was President's Rule first imposed in Haryana?Ans: **2 November 1967**
8. What type of legislature exists in Haryana ?Ans: **Unicameral**
9. There are how many Rajya Sabha seats in Haryana?Ans: **5**
10. How many Lok Sabha seats are there in Haryana?Ans: **10**
11. There are how many seats in Haryana State Legislative Assembly?Ans: **90**
12. How many major political parties are existing in the state of Haryana?Ans: **Four- Indian National Congress, Indian National Lok Dal(INLD), Bharatiya Janata Party and Bahujan Samaj Party**
13. When was Haryana formed as a partial state of India?Ans: **1 November 1966**
14. When was the Battle of Tara-in(Taraori)fought?Ans: **In 1191 and 1192**
15. Thanesar(Thaneswar)was the capital of which Pushyabhuti king?Ans: **Harshavardhana**
16. In which year did Firoz Shah Tughlak build a fort in Hisar district?Ans: **1354**
17. When was the first Battle of Panipat was fought?Ans: **1526**
18. When did the second Battle of Panipat take place?Ans: **1556**
19. Who was defeated in the second Battle of Panipat.Ans: **Hemu**
20. In which village of Haryana is the oldest Indus Valley Civilization site found?Ans: **Rakhigarhi**

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

मैं 'शिक्षा सारथी' का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका के सभी आलेख प्रेरणादायी लगे। डॉ.लोकेश कुमार शर्मा का आलेख ' अपनाना होगा गतिविधि आधारित शिक्षण' हर शिक्षक के लिए उपयोगी है। यह देखकर अच्छा लगता है कि श्रेष्ठ कार्य करने वाले शिक्षकों व विद्यार्थियों को पत्रिका में स्थान मिलता है। निश्चित तौर पर इससे अन्य अध्यापकों व विद्यार्थियों को भी प्रेरणा मिलती है। स्थायी स्तंभ 'बाल सारथी' 'खेल-खेल में सिखाएँ विज्ञान' हमेशा की भाँति खूब अच्छे लगे।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

आदरणीय सम्पादक महोदय,
सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ा। माननीय पीके दास के विचार 'शिक्षण में लाना होगा नवाचार' हर अध्यापक के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। प्रवेश-उत्सव की रिपोर्ट पढ़कर पता चला कि राजकीय विद्यालय उनके बारे में बनी विशेष धारणा को तोड़ पाने में सफल हो रहे हैं। प्रमोद शर्मा का लेख 'स्कूली शिक्षा से 'राष्ट्र-सेवा' का बीज अंकुरण' काफी पसंद आया। कविताएँ भी मन को खूब भाईं। कुल मिलाकर एक सारगर्भित अंक के लिए 'शिक्षा सारथी' टीम को हार्दिक बधाई।

नरेश शर्मा
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
बुंगा, जिला-पंचकूला

आँधी और दीपक

हे अमानुषो!
बनकर आँधी
बार-बार
झपटे हो...
मैं दीपक हूँ
नहीं बुझा था
नहीं बुझूँगा
चाहे जितना
जोर लगा लो
सागर की
लहरों से
लेकर गति
अथवा
प्रलय प्रभंजन
से रिश्तों की
रीति निभाकर
या बादल से
बारिश की
सौगातें लेकर..
मैं माटी में
उपजा
दीप
तेल
बाती
एवं अपनों की
उर - ऊष्मा का
संयोजन हूँ...
दायित्व-बोध
लेकर
माथे पर
जलता हूँ
जग को आलोकित
करता हूँ...
जब तक साथ
तेल-बाती का
मुझे मयस्सर...
तेरे हर
प्रहार के सम्मुख
खड़ा मिलूँगा
अड़ा मिलूँगा
आड़े - तिरछे
पड़ा मिलूँगा
छोटा अथवा
बड़ा मिलूँगा...
किन्तु नहीं
बुझ सकता
क्योंकि
लाखों लोगों
की आँखों का
सपना हूँ
जुगनू से
सूरज तक
रूप अनेकों मेरे
मैं अटल
अक्षय
अक्षुण्ण
अविनाशी
अपना हूँ!

डॉ. अवधेश कुमार 'अवध'
चतुर्थ तल, एलबी प्लाजा,
जीएस रोड़
भंगागढ़, गुवाहाटी, आसाम

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

शिक्षक कौन है?

शिक्षक न पद है, न पेशा है,
न व्यवसाय है।
न ही गृहस्थी चलाने वाली
कोई आय है।
शिक्षक सभी धर्मों से ऊँचा धर्म है।
गीता में उपदिष्ट
मा फलेषु वाला कर्म है।
शिक्षक एक प्रवाह है,
मंज़िल नहीं राह है।
शिक्षक पवित्र है,
महक फैलाने वाला इत्र है।
शिक्षक स्वयं जिज्ञासा है,
खुद कुआँ है पर प्यासा है।
वह डालता है चाँद सितारों
तक को तुम्हारी झोली में।
वह बोलता है बिल्कुल
तुम्हारी बोली में।
वह कभी मित्र,
कभी माँ, तो
कभी पिता का हाथ है ।
साथ न रहते हुए भी
ताउम्र का साथ है।
वह नायक, खलनायक
तो कभी विदूषक बन जाता है ।
तुम्हारे लिए न जाने
कितने मुखौटे लगाता है।
इतने मुखौटों के बाद भी
वह समभाव है ।
क्योंकि यही तो उसका,
सहज स्वभाव है।

शिक्षक कबीर के गोविंद से,
बहुत ऊँचा है ।
कहो भला कौन,
उस तक पहुँचा है।।
वह न वृक्ष है,
न पतियाँ है,
न फल है।
वह केवल खाद है।
वह खाद बनकर
हजारों को पनपाता है।
और खुद मिट कर
उन सब में लहराता है।
शिक्षक एक विचार है,
दर्पण है, संस्कार है ।
शिक्षक न दीपक है,
न बाती है,
न रोशनी है।
वह स्निग्ध तेल है।
क्योंकि उसी पर
दीपक का सारा खेल है।
शिक्षक तुम हो, तुम्हारे भीतर की
प्रत्येक अभिव्यक्ति है।
कैसे कह सकते हो
कि वह केवल एक व्यक्ति है।
शिक्षक चाणक्य, संदीपनी,
तो कभी विश्वामित्र है।
गुरु और शिष्य की
प्रवाही परंपरा का चित्र है।
शिक्षक साक्षी और साक्ष्य है।
चिर अन्वेषित लक्ष्य है।

शिक्षक अनुभूत सत्य है।
स्वयं एक तथ्य है।
शिक्षक ऊसर को
उर्वरा करने की हिम्मत है।
स्व की आहुतियों के द्वारा,
पर के विकास की कीमत है।
वह इंद्रधनुष है,
जिसमें सभी रंग हैं।
कभी सागर है,
कभी तरंग है।
वह रोज़ छोटे-छोटे
सपनों से मिलता है।
मानो उनके बहाने
स्वयं खिलता है।
वह राष्ट्रपति होकर भी,
पहले शिक्षक होने का गौरव है।
वह पुष्प का बाह्य सौंदर्य नहीं,
कभी न मिटने वाली सौरभ है।
वह भोजन पकाता है,
झाड़ू निकालता है,
दूध और फल लाता है।
इसके बावजूद अपनी मुख्य
भूमिका को बखूबी निभाता है।।
बदलते परिवेश की आँधियों में,
अपनी उड़ान को
जिंदा रखने वाली पतंग है।
अनगढ़ और बिखरे
विचारों के दौर में,
मात्राओं के दायरे में बद्ध,
भावों को अभिव्यक्त
करने वाला छंद है।
हाँ अगर ढूँढ़ोगे, तो उसमें
सैकड़ों कमियाँ नज़र आएँगी।
तुम्हारे आसपास जैसी ही
कोई सूरत नजर आएगी।
लेकिन यकीन मानो जब वह
अपनी भूमिका में होता है।
तब जमीन का होकर भी
वह आसमान सा होता है।
अगर चाहते हो उसे जानना,
ठीक-ठीक पहचानना।
तो सारे पूर्वाग्रहों को
मिट्टी में गाड़ दो।
अपनी आस्तीन पे लगी
अहं की रेत झाड़ दो।
फाड़ दो वे पन्ने जिनमें
बेतुकी शिकायतें हैं।
उखाड़ दो वे जड़ें
जिनमें छुपे निजी फायदे हैं।
फिर वह धीरे-धीरे स्वतः
समझ आने लगेगा।
अपने सत्य स्वरूप के साथ
तुम में समाने लगेगा।

-अज्ञात (फेसबुक से)

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114